- 20th Year
- Issue: 135
- 18.09.2026 (FRIDAY)
- ROURKELA
- R.N.I. No. ORIHIN/2006/18978
- (Pages-6)
- Price:2.00

e-paper-www.thekalingasamachar.com

दैनिक

कलिंग समाचार

The kalingasamachar

प्रकाशक एवं संपादक : प्रकाश कुमार धल

Published From ODISHA, JHARKHAND & CHHATTISHGARH

राजनाथ सिंह ने वाराणसी से वडनगर तक बाइक यात्रा को दिखाई हरी झंडी

वाराणसी १७/०९ (संवाददाता): प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संसदीय क्षेत्र को उनके जन्म स्थान से जोड़ने वाली एक मोटरसाइकिल यात्रा की शुरुआत के अवसर पर बृहस्पतिवार को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने वाराणसी और वडनगर के बीच लगभग 2,000 वर्ष पुराने संबंध का उल्लेख किया। वाराणसी में 'सेवा संकल्प' अभियान के शुरुआत पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सिंह ने कहा कि लगभग 2,000 वर्ष पहले बौद्ध भिक्षु ज्ञान और आध्यात्मिकता को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने के लिए सारनाथ से वडनगर गए थे। उन्होंने कहा,"आज हम उसी प्राचीन परंपरा को एक नए रूप में आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। सिंह ने वर्तमान यात्रा को आस्था,जल और सेवा के माध्यम से दोनों स्थानों को जोड़ने का प्रयास बताया। सिंह ने कहा कि यह यात्रा केवल एक भौगोलिक स्थान से दूसरे भौगोलिक स्थान तक की यात्रा नहीं है, बल्कि यह मोदी की 'जन्मभूमि' (वडनगर) और 'कर्मभूमि' (वाराणसी) के बीच एक संबंध का प्रतिनिधित्व करती है। उन्होंने कहा कि काशी से गंगाजल वडनगर ले जाया जाएगा ताकि हरकेश्वर महादेव का जलाभिषेक किया जा सके। सिंह ने बताया कि गुजरात की पवित्र नदियों और शर्मिष्ठा झील का जल वाराणसी लाया जाएगा ताकि बाबा विश्वनाथ का अभिषेक किया जा सके। उन्होंने कहा, "काशी की दिव्यता गुजरात जा रही है और गुजरात की आस्था काशी आ रही है।" उन्होंने इसे यात्रा की सबसे बड़ी खासियत बताया। सिंह ने कहा कि जल का यह आदान-प्रदान भावनाओं के आदान-प्रदान का भी प्रतीक है। उन्होंने कहा कि यह यात्रा एक 'अद्भुत दृश्य' पेश करेगी जब मोदी की जन्मभूमि और कर्मभूमि जल और आस्था के जरिए एक-दूसरे से जुड़ेंगी। उन्होंने कहा कि यह यात्रा वडनगर से जुड़े मूल्यों, काशी के आशीर्वाद और मोदी के सेवा करने के संकल्प का संगम भी है। सिंह ने कहा, "यह संस्कार, साधना और सेवा के संगम की यात्रा है।" रक्षा मंत्री ने कहा कि जिस ऐतिहासिक जुड़ाव की उन्होंने बात की थी, उसे 'सेवा संकल्प अभियान' के जरिए आज के दौर के हिसाब से नया रूप दिया जा रहा है। इस अभियान का मकसद मोदी के जन्मदिन के जश्न को सेवा कार्यों से जोड़ना भी है। उन्होंने कहा कि इस यात्रा में मंजिल तो अहम है ही, रास्ते में पड़ने वाले पड़ाव भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जहां सेवा कार्यक्रम तय किए गए हैं। सिंह ने कहा कि इन गतिविधियों का मकसद लोगों से बातचीत करना, विकास कार्यों में उनकी भागीदारी बढ़ाना और समाज के हर वर्ग तक पहुंचना है। वाराणसी से वडनगर तक की 'सेवा संकल्प' मोटरसाइकिल यात्रा की शुरुआत उज़र प्रदेश के मुज़्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, आंध्र प्रदेश के मुज़्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू, केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान और केंद्रीय मंत्री व भाजपा के उज़र प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी की मौजूदगी में की गई। भाजपा का व्यापक 'सेवा संकल्प अभियान' मोदी के 76वें जन्मदिन और उनके समर्पित जनसेवा के 25 साल पूरे होने के मौके पर आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने पहले गुजरात के मुज़्यमंत्री और फिर भारत के प्रधानमंत्री के तौर पर यह सेवा की है।

युथ कांग्रेस ने पीएम मोदी के जन्मदिन को बातया बेरोजगारी दिवस, बेंगलुरु में प्रदर्शन

बेंगलुरु १७/०९ (संवाददाता): कर्नाटक प्रदेश युवा कांग्रेस ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जन्मदिन विश्व बेरोजगारी दिवस के तौर पर मनाया। उन्होंने प्रधानमंत्री पर हर साल दो करोड़ नौकरियां देने का वादा पूरा न कर पाने का आरोप लगाया। बेंगलुरु में KPCC दज़्तर में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस हुई, जिसमें युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने मेलोडी चॉकलेट बांटकर यह दिन मनाया। KPCC अध्यक्ष बी.के. हरिप्रसाद ने पोस्टर और बैनर जारी किए, जिनमें प्रधानमंत्री को व्यंग्यात्मक अंदाज में जन्मदिन की बधाई दी गई। इस मौके पर कर्नाटक प्रदेश युवा कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष एच.एस. मंजूनाथ गौड़ा ने कहा कि नौकरी की तैयारी में सालों बिताने वाले युवा परीक्षा में गड़बड़ी, प्रश्नपत्र लीक होने और भर्ती में देरी की वजह से परेशान हैं। गौड़ा ने कहा जो सरकार युवाओं को रोज़गार नहीं दे सकती, वह देश का भविष्य कैसे बना सकती है? आने वाली पीढ़ी निश्चित रूप से मोदी को %बेरोज़गारी का जनक% कहेगी ज़्योंकि वे बेरोज़गारी बढ़ने के लिए ज़िज़्मेदार हैं। आंकड़ों का हवाला देते हुए उन्होंने कहा नीति आयोग की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, देश में 15-29 साल की उम्र के लगभग 8.7 करोड़ युवा शिक्षा, रोज़गार या प्रशिक्षण में शामिल नहीं हैं। इसके अलावा, ऋझ्ढ से मिली जानकारी से पता चला है कि केंद्र सरकार के 80 मंत्रालयों और विभागों में 8.23 लाख से ज़्यादा मंज़ूरशुदा सिविलियन पद खाली पड़े हैं। इस मौके पर सैकड़ों यूथ कांग्रेस कार्यकर्ता जमा हुए। उन्होंने प्लेकार्ड पकड़े हुए थे और ऐसे नारे लगा रहे थे जैसे - नौकरी मांगने वाले युवाओं को %पकौड़े% देने वाले प्रधानमंत्री को जन्मदिन की बधाई !, नौकरियां कहां हैं? इस सवाल पर 11 साल से चुप रहने वाले मौन-मोदी को जन्मदिन की बधाई! और बेरोज़गारी के जनक नरेंद्र मोदी को जन्मदिन की बधाई! KPYC की राज्य उपाध्यक्ष दिव्या, ज़िला अध्यक्ष रंजीत, राहुल और प्रवीण के साथ-साथ राज्य के पदाधिकारी और वॉलंटियर भी वहां मौजूद थे।

दिशा सालियान केस में उद्धव ठाकरे ने दी कानूनी कार्रवाई की चेतावनी

मुंबई १७/०९ (संवाददाता): शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने बृहस्पतिवार को कहा कि 2020 के दिशा सालियान मौत मामले को लेकर उनके परिवार के खिलाफ चलाया जा रहा चरित्र हनन अभियान यदि नहीं रुका तो वह कानूनी कार्रवाई करेंगे। महाराष्ट्र के पूर्व मुज़्यमंत्री का यह बयान बंबई उच्च न्यायालय द्वारा सालियान की मौत की सीबीआई जांच का आदेश दिए जाने के कुछ दिन बाद आया है। अदालत ने सालियान के पिता की याचिका पर यह आदेश दिया था। इसके बाद केंद्रीय एजेंसी ने किसी आरोपी का नाम लिए बिना मामला दर्ज किया। ठाकरे ने यहां पत्रकारों के सवालों का जवाब देते हुए कहा, इस मामले से हमारा कोई संबंध नहीं है। आदित्य (ठाकरे) भी यह कह चुके हैं। यह मुद्दा सिर्फ मेरे बारे में नहीं है। इस तरह का चरित्र हनन आप लोगों के साथ भी हो सकता है। ठाकरे ने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा, यदि इस तरह के आरोप लगातार लगाए जाते हैं तो कोई कब तक इसे बर्दाश्त करेगा? मुझे हैरानी है कि इस मामले में मोदी और ट्रंप के नाम ज़्यों नहीं हैं। ठाकरे ने दोहराया कि सालियान की मौत दुर्भाग्यपूर्ण घटना थी, लेकिन उनके परिवार का इससे कोई संबंध नहीं था। उन्होंने कहा, यह राजनीतिक रूप से प्रेरित है। हम चुप रहे ज़्योंकि एसआईटी (विशेष जांच दल) मामले की जांच कर रही थी। जो लोग जांच करना चाहते हैं, वे करते रहें। लेकिन अब बिना वजह चरित्र हनन बहुत हो चुका है, नहीं तो हम कानूनी कदम उठाएंगे।

बुधवार को उनके बेटे और विधायक आदित्य ठाकरे ने दावा किया था कि वह कभी दिशा सालियान से नहीं मिले। आदित्य ने सोशल मीडिया मंच एज़्स पर एक पोस्ट में कहा, मैं कभी दिशा सालियान से नहीं मिला और न ही उन्हें जानता था। इस दुखद मामले में मेरा नाम जोड़ना कुछ लोगों द्वारा राजनीतिक और निजी हितों के कारण लगभग छह साल से किया जा रहा एक जानबूझकर और बिना सबूत वाला चरित्र हनन अभियान है।

दिशा सालियान (28) बॉलीवुड अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की पूर्व प्रबंधक थीं। उनकी 8 जून 2020 को मुंबई के मलाड इलाके में एक आवासीय इमारत की 12वीं मंजिल से गिरने के बाद मौत हो गई थी।

पीएम मोदी के जन्मदिन पर राजस्थान में सेवा अभियान, सीएम भजन लाल शर्मा ने गिनाए विकास कार्य

जयपुर १७/०९ (संवाददाता): राजस्थान के मुज़्यमंत्री भजनलाल शर्मा और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष मदन राठौड़ ने बृहस्पतिवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 76वें जन्मदिन के अवसर पर राज्य में विभिन्न कार्यक्रमों का नेतृत्व किया। इस दौरान सेवा गतिविधियां आयोजित की गईं और प्रधानमंत्री की लंबी आयु की कामना के लिए दीप जलाए गए। शर्मा ने मोदी को जन्मदिन की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री का जीवन जनसेवा और राष्ट्रसेवा के लिए समर्पित रहा है। उन्होंने कहा कि मोदी के नेतृत्व में भारत आत्मनिर्भरता, सुशासन और विकसित राष्ट्र के लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ रहा है। मुज़्यमंत्री ने कहा कि केंद्र के सहयोग से राजस्थान को भी कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं का लाभ मिल रहा है। उन्होंने राम जल सेतु लिंक परियोजना, यमुना जल समझौते, राजस्थान रिफाइनरी और जयपुर मेट्रो के द्वितीय चरण का उल्लेख प्रमुख परियोजनाओं के रूप में किया। शर्मा ने राज्य सरकार की भर्ती पहलों का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि पिछले ढाई वर्षों में 1.90 लाख नियुक्तियां की गई हैं, जबकि 1.20 लाख अन्य पदों पर भर्ती प्रक्रिया चल रही है। उन्होंने कहा कि 2026 के लिए 1.25 लाख पदों का भर्ती कैलेंडर जारी किया गया है।

'विकसित भारत जन सेवा अभियान' के तहत शर्मा ने मुज़्यमंत्री आवास पर युवाओं से युवा बजट को लेकर संवाद किया। उन्होंने युवाओं से मोदी के 'राष्ट्र प्रथम' के दृष्टिकोण से प्रेरणा लेने और विकसित भारत के लक्ष्य में योगदान देने का आह्वान किया।

एनसीबी ने केरल और बेंगलुरु में तोड़ा कोकीन तस्करी नेटवर्क, सात गिरफ्तार

बेंगलुरु १७/०९ (संवाददाता): स्वापक नियंत्रण ज़्यूरो (एनसीबी) ने बेंगलुरु और केरलम के बीच संचालित अंतरराज्यीय कोकीन तस्करी नेटवर्क में कथित रूप से शामिल दो विदेशी नागरिक समेत सात लोगों को गिरज़्तार किया है। अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि एनसीबी की कोच्चि क्षेत्रीय इकाई ने 'डोमिनो' नाम से चलाए गए अभियान के दौरान कुल 33.1 ग्राम कोकीन जज़्त की, जिसकी कीमत 16.55 लाख रुपये आंकी गई है। अधिकारियों के अनुसार, एनसीबी को बेंगलुरु और केरलम के बीच सक्रिय एक मादक पदार्थ तस्करी नेटवर्क से कथित संबंधों की जानकारी मिली थी। इसके आधार पर ज़्यूरो संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) से मादक पदार्थ संबंधी मामलों में निर्वासित किए गए लोगों की गतिविधियों और उनके संपर्कों पर नजर रख रहा था। एनसीबी ने बताया कि 10 सितंबर को पंजाब के कपूरथला के गुरप्रीत सिंह, कोझिकोड के बेपोर (उज़र) के हमदान अहमद और अरक्किनार निवासी अफलाह पी. को फारूक रेलवे स्टेशन पर रोका गया तथा उनके कज़्जे से 8.12 ग्राम कोकीन बरामद हुई। अधिकारियों ने बताया कि प्रारंभिक पूछताछ में पता चला कि कोकीन बेंगलुरु से लायी गयी थी। उन्होंने बताया कि पूछताछ के बाद सिधार्थ दामोर को गिरज़्तार किया गया, जिसे 10 सितंबर को तिरुवनंतपुरम से कोझिकोड जाते समय पकड़ा गया था।

उन्होंने बताया कि उससे पूछताछ के आधार पर जांचकर्ताओं की नजर बेंगलुरु में रहने वाला तमिलनाडु निवासी और आईटी क्षेत्र में कार्यरत अरुण राजकुमार पर गयी। अरुण राजकुमार को नेटवर्क में एक प्रमुख सूत्रधार के रूप में चिह्नित किया गया और बाद में गिरज़्तार कर लिया गया। अधिकारियों के अनुसार दामोर और अरुण राजकुमार से पूछताछ के आधार पर एजेंसी ने तस्करी नेटवर्क में कथित रूप से शामिल दो विदेशी नागरिकों की पहचान की। एनसीबी ने बताया कि नाइजीरियाई नागरिक चिजोबा हेलेन एंथनी उर्फ सोनिया को 12 सितंबर को बेंगलुरु में पकड़ा गया और उसके कज़्जे से 16 ग्राम कोकीन बरामद की। वह मेडिकल अटेंडेंट वीजा पर भारत आई थी और कथित तौर पर 10 वर्ष से अधिक समय से वीजा अवधि समाप्त होने के बावजूद भारत में रह रही थी। एनसीबी ने बताया कि जिज़्बाज़्वे के नागरिक मुफुकारे विट्टालिस ताडिस्वानाशे को 13 सितंबर को बेंगलुरु में पकड़ा गया और उसके कज़्जे से 8.98 ग्राम कोकीन बरामद की गई।

पीएम मोदी ने योग और कुंभ को ग्लोबल स्तर पर दिलाई पहचान-योगी

वाराणसी १७/०९ (संवाददाता): उज़र प्रदेश के मुज़्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व ने वैश्विक मंच पर भारत की सांस्कृतिक विरासत को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। उन्होंने योग को मिली अंतरराष्ट्रीय पहचान और यूनेस्को द्वारा कुंभ मेले को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का दर्जा दिए जाने को फिर से उभरते नए भारत की अहम उपलज़्धियां बताया। काशी-वडनगर के बीच 20 दिन की यूथ बाइक रैली को हरी झंडी दिखाते हुए सीएम योगी ने कहा कि पीएम मोदी के शासन में इन बदलावों ने दुनिया भर में भारत को एक खास पहचान दिलाई है। उन्होंने कहा कि चाहे केदारनाथ हो, बद्रीनाथ धाम हो या महाकाल लोक कॉरिडोर, ये विकास कार्य %नए भारत% की एक नई तस्वीर पेश करते हैं। यह हमारी सांस्कृतिक जड़ों के प्रति हमारे गहरे सज़्मान को दर्शाता है।

मुज़्यमंत्री ने इस बात पर ज़ोर दिया कि पिछले दशक में भारतीय परंपराओं को दुनिया भर में अभूतपूर्व सज़्मान मिला है। उन्होंने योग को वैश्विक पहचान दिलाने और कुंभ मेले को यूनेस्को का सांस्कृतिक विरासत का दर्जा दिलाने का श्रेय मोदी के निर्णायक नेतृत्व को दिया। प्रधानमंत्री मोदी के राजनीतिक सफ़र पर बात करते हुए योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आज पूरा देश और दुनिया मोदी जी की अथक मेहनत, तपस्या और समर्पण की गवाह बन रही है; उन्होंने वडनगर के एक गाँव से अपना सफ़र शुरू किया और दुनिया के सबसे लोकप्रिय राजनीतिक नेता के तौर पर उभरे।

इस कार्यक्रम में केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, आंध्र प्रदेश के मुज़्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू, केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान और रैली में शामिल होने वाले सैकड़ों युवा स्वयंसेवक मौजूद थे। मुज़्यमंत्री योगी ने प्रधानमंत्री मोदी के जन्मस्थान वडनगर को उनके संसदीय क्षेत्र वाराणसी से जोड़ने वाले 20 दिन के इस अभियान को एक अहम पहल बताया।

वाराणसी में भाषण के दौरान सीएम चंद्रबाबू नायडु ने हिंदी बोलकर जीता जनता का दिल

वाराणसी १७/०९ (संवाददाता): आंध्र प्रदेश के मुज़्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने बृहस्पतिवार को वाराणसी में एक कार्यक्रम के दौरान बार-बार हिंदी का इस्तेमाल करके लोगों का दिल जीत लिया। हर-हर महादेव , भारत माता की जय और जय श्री राम के साथ अपना भाषण शुरू करने से लेकर अहम मौकों पर छोटे-छोटे हिंदी वाज़्य बोलने तक नायडू ने भीड़ से जुड़ने के लिए इस का इस्तेमाल किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का 76वां जन्मदिन मनाने और निर्वाचित प्रतिनिधि के तौर पर उनके 25 साल पूरे करने का जश्न मनाने के लिए आयोजित कार्यक्रम में नायडू ने कहा, "आज मैं काशी की पवित्र धरती पर खड़ा हूं। यह मेरे लिए गर्व का क्षण है। काशी सबसे प्राचीन नगरी है और काशी नई सोच भी देती है।" उनकी इस बात पर भीड़ ने तालियां बजाईं। इस दौरान मंच पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान, उज़र प्रदेश के मुज़्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की उज़र प्रदेश इकाई के अध्यक्ष पंकज चौधरी मौजूद थे। साथ ही उज़र प्रदेश के कई मंत्री और विधायक भी शामिल थे। नायडू ने रुद्राक्ष इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में लगभग 33 मिनट तक सभा को संबोधित किया। इस कार्यक्रम में वाराणसी से वडनगर तक सेवा संकल्प बाइक यात्रा की शुरुआत भी की गयी।

नायडू ने अपना भाषण हिंदी में शुरू किया और फिर जल्द ही अंग्रेजी में बोलने लगे। भाषण शुरू होने के लगभग छह मिनट बाद उन्होंने रुककर दर्शकों से पूछा कि ज़्या वे चाहते हैं कि उनके भाषण का हिंदी में अनुवाद किया जाए। उन्होंने कहा, ज़्या आप चाहते हैं कि मेरे भाषण का हिंदी में अनुवाद किया जाए? ऐसा भी किया जा सकता है। नायडू ने इसके बाद मौजूद लोगों की प्रतिक्रिया देखी और पाया कि ज्यादातर लोग कह रहे थे कि इसकी कोई जरूरत नहीं है। हालांकि, इसके तुरंत बाद उन्होंने हिंदी में बोलना शुरू किया और कहा, अन्नदाता मजबूत होगा तो देश मजबूत होगा। इस पर दर्शकों ने जोरदार तालियां बजाईं और नारे लगाए। इसके बाद वह फिर से अंग्रेजी में बोलने लगे, लेकिन अपने बोलने के अंदाज को बदलते रहे। वह और ज्यादा जोश भरे अंदाज में बोले, खासकर तब जब उन्होंने कोविड महामारी के दौरान मोदी के नेतृत्व की तारीफ की।

एक और मौके पर उन्होंने अपने भाषण के बड़े राष्ट्रीय संदेश को बताने के लिए फिर से हिंदी का सहारा लिया। नायडू ने कहा, देश बदल रहा है, देश आगे बढ़ रहा है। उन्होंने भारत को नया भारत और आत्मनिर्भर भारत बताया। उन्होंने सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास का भी जिक्र किया। नायडू जब अपना भाषण खत्म करके अपनी सीट की ओर बढ़े तो उनके साथ बैठे नेता खड़े हो गये। आदित्यनाथ ने नायडू से हाथ मिलाया और दर्शकों से अपनी सीट पर बैठने और शांत होने का इशारा किया। नायडू के ठीक बाद कार्यक्रम को संबोधित करने वाले राजनाथ सिंह ने अपने भाषण की शुरुआत नायडू के भाषण की तारीफ करते हुए की। सिंह ने कहा, चंद्रबाबू नायडू जी, आपने बहुत अच्छा बोला, बहुत अच्छा।

विविध समाचार

टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा पहुंची यूएन, अमित शाह के दौरों में मुस्लिम अफसरों से भेदभाव का आरोप

कोलकाता १७/०९ (संवाददाता): तृणमूल कांग्रेस सांसद महुआ मोइत्रा ने अल्पसंज़्यकों से जुड़े मुद्दों को लेकर संयुक्त राष्ट्र के विशेष प्रतिवेदक को पत्र लिखकर आरोप लगाया है कि पश्चिम बंगाल में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के दौरों के दौरान, वरिष्ठ मुस्लिम आईएएस और आईपीएस अधिकारियों को उनके धर्म की वजह से आधिकारिक कार्यक्रमों से बाहर रखा गया। मोइत्रा ने कुछ दिन पहले, सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में यह मुद्दा उठाया था। उन्होंने आरोप लगाया था कि उज़र बंगाल में शाह के कार्यक्रमों से भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) और भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) के मुस्लिम अधिकारियों को दूर रखा गया। तृणमूल सांसद ने सिलीगुड़ी के पुलिस आयुक्त वकार रजा, पश्चिम बंगाल पुलिस के विशेष कार्य बल (एसटीएफ) के प्रमुख जावेद शमीम और आईएएस अधिकारी खलील अहमद के नाम का उल्लेख किया था। बाद में, इस पोस्ट को लेकर डायमंड हार्बर पुलिस थाने में मोइत्रा के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई गई, जिसके बाद साइबर अपराध पुलिस ने पूछताछ के लिए उन्हें बुलाया था। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त कार्यालय (ओएचसीएचआर) में अल्पसंज़्यक मामलों के स्वतंत्र मानवाधिकार विशेषज्ञ निकोलस लेव्रैट को लिखे पत्र में मोइत्रा ने आरोप लगाया कि जुलाई और अगस्त में शाह के दौरों के दौरान तीन मौकों पर तीन वरिष्ठ अधिकारियों को या तो कार्यक्रम स्थल से जाने के लिए कहा गया या उन्हें आधिकारिक कार्यक्रमों के दौरान उपस्थित नहीं रहने को कहा गया।अल्पसंज़्यकों से जुड़े मुद्दों पर संयुक्त राष्ट्र के विशेष प्रतिवेदक स्वतंत्र मानवाधिकार विशेषज्ञ होते हैं, जिन्हें संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद द्वारा नियुक्त किया जाता है। उनका काम वैश्विक स्तर पर जागरूकता

बढ़ाना, बाधाओं की पहचान करना तथा राष्ट्रीय, जातीय, धार्मिक और भाषाई अल्पसंज़्यकों के अधिकारों की रक्षा करना है। मोइत्रा ने आरोप लगाया कि इन (आईएएस और आईपीएस) अधिकारियों को कार्यक्रम से बाहर रखा गया, जबकि दूसरे धर्म के उनके सहकर्मियों को उस दौरान उपस्थित रहने की इजाजत दी गई। मोइत्रा ने पत्र में कहा, ''इन तीनों अधिकारियों में एक बात समान है, और यही बात उन्हें उन सहकर्मियों से अलग करती है जिन्हें कार्यक्रम के दौरान मौजूद रहने की इजाजत दी गई थी – – और वह है उनका धर्म।'' तृणमूल सांसद ने दावा किया कि जिन अधिकारियों को कथित तौर पर बाहर रखा गया, उनकी मौजूदगी केंद्रीय गृह मंत्री के दौरों के दौरान आधिकारिक प्रोटोकॉल और सरकारी कामकाज के संचालन से जुड़ी हुई थी। मोइत्रा ने पूर्व में आरोप लगाया था कि जब शाह मौजूद थे, तो वकार रजा को स्वागत करने वाले समूह में शामिल होने से रोक दिया गया था, जबकि जावेद शमीम को केंद्रीय मंत्री की भागीदारी वाले कार्यक्रमों में नहीं बुलाया गया था।

उन्होंने यह भी आरोप लगाया था कि खलील अहमद को एक बैठक से बाहर जाने के लिए मजबूर किया गया था। 'पीटीआई-भाषा' मोइत्रा के आरोपों को स्वतंत्र रूप से सत्यापित नहीं कर सकी है। मोइत्रा ने इन कथित घटनाओं को ''जानबूझकर बाहर रखने'' का एक पैटर्न बताया और कहा कि इस तरह के व्यवहार से पुलिस और सुरक्षा प्रतिष्ठानों में अल्पसंज़्यक समुदायों के विश्वास और सुरक्षा पर व्यापक प्रभाव पड़ सकता है। उन्होंने अपनी शिकायत में मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा और नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतरराष्ट्रीय संधि के प्रावधानों का हवाला देते हुए आरोप लगाया कि कथित व्यवहार भेदभावपूर्ण है। मोइत्रा ने यह भी तर्क दिया कि (मुस्लिम अधिकारियों को) कथित तौर पर (आधिकारिक कार्यक्रमों से) बाहर रखा जाना इसलिए भी मायने रखता है कि शाह केंद्रीय गृह मंत्रालय के प्रमुख हैं, जिसके तहत कई केंद्रीय पुलिस, सीमा और खुफिया एजेंसियां आती हैं। तृणमूल नेता ने संयुक्त राष्ट्र के स्वतंत्र विशेषज्ञ से आग्रह किया कि (अल्पसंज़्यक अधिकारियों को आधिकारिक कार्यक्रमों से) कथित तौर पर बाहर रखने के कारणों और इसके पीछे के प्राधिकार के बारे में भारत सरकार से स्पष्टीकरण मांगा जाए। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र के स्वतंत्र विशेषज्ञ से यह सुनिश्चित करने का भी अनुरोध किया कि किसी भी अधिकारी को धर्म के आधार पर आधिकारिक कार्यक्रमों से बाहर न रखा जाए तथा पुलिस और सुरक्षा एजेंसियां बिना किसी भेदभाव के अल्पसंज़्यक समुदायों के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करें।

शशि थरूर मानद डीलिट की उपाधि से समानित

कोलकाता १७/०९ (संवाददाता):राजनयिक से कांग्रेस सांसद बने शशि थरूर को शनिवार को कोलकाता स्थित सेंट जेवियर्स विश्वविद्यालय के सातवें दीक्षा समारोह में मानद डॉज़्टर ऑफ लेटर्स (डीलिट) की उपाधि से सज़्मानित किया गया, जिसे उन्होंने भारत में अपनी पहली मानद डॉज़्टरेट बताया।

यह समारोह न्यू टाउन स्थित बिस्वा बांग्ला कन्वेंशन सेंटर में आयोजित किया गया, जहां 1,052 स्नातक और स्नातकोज़र छात्रों को उपाधियां प्रदान की गईं। 25 पीएचडी शोधार्थियों को सज़्मानित किया गया और 17 छात्रों को स्वर्ण पदक प्राप्त हुए।

थरूर ने समाज की सेवा के रूप में शिक्षा के अंतिम उद्देश्य को रेखांकित करते हुए छात्रों से नागरिक उज़रदायित्व को अपनाने का आग्रह किया। शिक्षा जगत में महिलाओं की प्रगति की भी सराहना की और कहा कि कई स्वर्ण पदक विजेता महिलाएं हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत का भविष्य ऐसे नागरिकों द्वारा गढ़ा जाएगा जो कौशल और संवेदनशीलता का सही संयोजन करते हैं।

पुरानी दिल्ली में आतंकी हमले का बड़ा अलर्ट, लश्कर आतंकियों की लाल किला और चांदनी चौक के मंदिर पर हमले की तैयारी

नयी दिल्ली १७/०९ (संवाददाता): राजधानी दिल्ली में एक बार फिर आतंकी हमले का साया मंडरा रहा है। खुफिया एजेंसियों ने पाकिस्तान स्थित आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा (स्द्गञ्ज) द्वारा पुरानी दिल्ली के ऐतिहासिक और धार्मिक स्थलों को निशाना बनाने की साजिश का पर्दाफाश किया है। इस इनपुट के बाद दिल्ली पुलिस और केंद्रीय सुरक्षा एजेंसियों ने पूरी राजधानी, विशेषकर भीड़भाड़ वाले इलाकों में हाई अलर्ट जारी कर दिया है।

इंडिया टुडे को मिले एक इंटेलिजेंस नोट से पता चलता है कि आतंकवादी लाल किले के आसपास के इलाकों और घनी आबादी वाले चांदनी चौक इलाके में मौजूद मंदिरों में इज़्प्रोवाइज्ड एज़्सप्लोसिव

डिवाइस (ढ्ढश्वष्ठ) से हमला करने की कोशिश कर सकते हैं।

मौजूदा जानकारी के मुताबिक, यह संदिग्ध साजिश 6 फरवरी को इस्लामाबाद में एक मस्जिद में हुए हालिया धमाके के बाद बदले की कोशिश से जुड़ी है, जिसमें स्द्गञ्ज के सदस्य कथित तौर पर भारत में एक बड़ा हमला करने की फिराक में हैं। इंटेलिजेंस एजेंसियों ने चेतावनी दी है कि देश भर के प्रमुख मंदिर संभावित टारगेट बने रह सकते हैं। इनपुट के बाद, दिल्ली पुलिस और केंद्रीय सुरक्षा एजेंसियों ने संवेदनशील इलाकों, खासकर पुरानी दिल्ली में निगरानी बढ़ा दी है।

अतिरिक्त कर्मियों को तैनात किया गया है, गाड़ियों की जांच बढ़ा दी गई है, और धार्मिक स्थलों और टूरिस्ट हब के पास एंटी-सैबोटेज इंस्पेज़्शन शुरू किए गए हैं।

यह नया टेरर अलर्ट 10 नवंबर, 2025 को दिल्ली के लाल किले के पास हुए कार बम धमाके के लगभग तीन महीने बाद आया है, जो हाल के सालों में राजधानी में हुई सबसे खतरनाक टेरर घटनाओं में से एक थी। लाल किला मेट्रो स्टेशन के पास विस्फोटकों से लदी हुंडई द्ब20 से हुए इस धमाके में कम से कम 12 लोग मारे गए और 20 से ज़्यादा लोग घायल हो गए, जबकि पास की कई गाड़ियों में आग लग गई। जांचकर्ताओं ने बाद में कन्फर्म किया कि धमाके में अमोनियम नाइट्रेट वाले विस्फोटकों का इस्तेमाल किया गया था।

जांच एजेंसियों ने गाड़ी के ड्राइवर की पहचान उमर मोहज़्मद उर्फ ??उमर उन नबी के रूप में की, जो फरीदाबाद में अल-फलाह यूनिवर्सिटी से जुड़ा एक डॉज़्टर था। मलबे से मिले इंसानी अवशेषों के ष्ठहृ्न एनालिसिस से धमाके के समय गाड़ी के अंदर उसकी मौजूदगी की पुष्टि हुई, जांचकर्ताओं ने उसे पड़ोसी हरियाणा से ऑपरेट हो रहे एक बड़े टेरर मॉड्यूल से जोड़ा।

टेलीविजन रिपोर्ट्स में बताए गए जांचकर्ताओं के मुताबिक, यह धमाका सुरक्षा एजेंसियों द्वारा फरीदाबाद में लगभग 2,900 द्मद्द विस्फोटक बरामद करने और मॉड्यूल के मुज़्य सदस्यों को गिरज़्तार करने के कुछ घंटों बाद हुआ, जिनमें डॉ. मुजज़्मिल और डॉ. आदिल राथर जैसे साथी शामिल थे। सूत्रों ने बताया कि नेटवर्क पर कार्रवाई के बढ़ते दबाव के बीच उमर ने कथित तौर पर लाल किले के पास गाड़ी में समय से पहले धमाका कर दिया।

अंतिम संस्कार की रस्मों को लेकर आदिवासी-ईसाई सांप्रदायिक झड़प, 20 से अधिक पुलिसकर्मी घायल

कांकेर १७/०९ (संवाददाता): अमाबेड़ा क्षेत्र के तेवड़ा गांव में ग्राम सरपंच के पिता चामरा राम के अंतिम संस्कार को लेकर तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गई। आदिवासी और ईसाई समुदायों ने संपज़्यिों में तोड़फोड़ की और आपस में झड़प की। पुलिस ने व्यवस्था बहाल करने के लिए गांव में कर्फ्यू लगा दिया है। छज़्ीसगढ़ के कांकेर जिले में तोड़फोड़ और आगजनी का एक मामला सामने आया है। आदिवासी और ईसाई समुदाय सड़कों पर उतर आए और इस तरह अशांत स्थिति उत्पन्न हो गई, जहां दोनों पक्षों ने एक चर्च को जला दिया और एक-दूसरे पर पत्थर फेंके। सूत्रों के अनुसार, लोगों ने चरण राम सलाम के दफन की खबर मिलने के बाद यह कार्रवाई की। आदिवासी समुदाय का

मानना था कि अंतिम संस्कार उनके स्थानीय रीति-रिवाजों के अनुसार नहीं किया गया, ज़्योंकि शोक संतप्त परिवार ने पहले धर्म परिवर्तन कर लिया था।

16 दिसंबर को उनकी मृत्यु के बाद, परिवार ने गांव में अपनी निजी जमीन पर अंतिम संस्कार किया और शव को दफना दिया। आदिवासी लोगों को संदेह हुआ और उन्होंने शव को कब्र से निकालने की मांग करते हुए विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया।शिकायतों के बाद, कार्यकारी मजिस्ट्रेट ने कानूनी प्रावधानों के अनुसार शव को कब्र से निकालने का आदेश दिया, जिसके कारण झड़प हुई। संघर्ष की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति को शांत करने का प्रयास कर रही है। इस घटना में अंतागढ़ के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक आशीष बंचोर सहित 20 से अधिक पुलिसकर्मी घायल हो गए हैं।

छज़्ीसगढ़ में नज़्सलवाद पर सुरक्षाबलों का शिकंजा, बीजापुर में 5 लाख का इनामी माओवादी ढेर

बीजापुर १७/०९ (संवाददाता):छज़्ीसगढ़ के बीजापुर जिले में सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ में पांच लाख रुपये के इनामी नज़्सली को मार गिराया है। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि शुक्रवार को छज़्ीसगढ़ के बीजापुर जिले में सुरक्षाकर्मियों के साथ मुठभेड़ में 5 लाख रुपये का इनाम वाला एक नज़्सली मारा गया। उन्होंने बताया कि भैरमगढ़ पुलिस स्टेशन इलाके में आडवाड़ा-कोटमेटा के जंगल में आज सुबह गोलीबारी हुई, जब डिस्ट्रिज़्ट रिजर्व गार्ड की एक टीम इलाके में माओवादी कैडरों की मौजूदगी की जानकारी के आधार पर नज़्सल विरोधी अभियान पर निकली थी। उन्होंने बताया कि गोलीबारी खत्म होने के बाद मुठभेड़ वाली जगह से एक नज़्सली का शव, एक .303 राइफल, एक 9स्रूरू पिस्टल और विस्फोटक सामग्री बरामद की गई। उन्होंने बताया कि मुठभेड़

में मारे गए नज़्सली की पहचान एरिया कमेटी सदस्य फगनू माड़वी (35) के रूप में हुई है जिस पर पांच लाख रुपये का इनाम घोषित था। बस्तर क्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक सुंदरराज पी ने बताया कि 2025 में सुरक्षा बलों की प्रभावी एवं समन्वित कार्रवाई के परिणामस्वरूप बस्तर में माओवाद अब अपनी अंतिम सांसें गिन रहा है।

उन्होंने कहा कि माओवादी संगठन का पूरा तंत्र बिखर चुका है और हिंसा या दहशत फैलाने के उनके किसी भी प्रयास का अब कोई असर नहीं रह गया है। पुलिस महानिरीक्षक ने सभी सक्रिय नज़्सलियों से हिंसा का मार्ग त्याग कर सरकार की आत्मसमर्पण एवं पुनर्वास नीति का लाभ उठाने की अपील की है। छज़्ीसगढ़ के नज़्सल प्रभावित क्षेत्रों में नज़्सलियों के खिलाफ अभियान जारी है। बृहस्पतिवार को सुकमा जिले में सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ में कुल 12 लाख रुपये के इनामी तीन माओवादियों को मार गिराया था जिनमें एक महिला नज़्सली भी शामिल थी। इस कार्रवाई के साथ, इस साल अब तक छज़्ीसगढ़ में मुठभेड़ में 285 नज़्सली मारे जा चुके हैं। इनमें से 256 बस्तर क्षेत्र में मारे गए, जिसमें बीजापुर, सुकमा और दंतेवाड़ा सहित सात जिले शामिल हैं। वहीं 27 अन्य रायपुर क्षेत्र के अंतर्गत गरियाबंद जिले में मारे गए। राज्य के दुर्ग क्षेत्र के मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिले में दो नज़्सली मारे गए हैं।

अखिलेश यादव को उपदेश नहीं देना चाहिए...सपा प्रमुख को लेकर ऐसा ज़्यों बोले केशव प्रसाद मौर्य

लखनऊ १७/०९ (संवाददाता): उज़र प्रदेश के उपमुज़्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने शुक्रवार को विधानसभा में चर्चा के लिए रखे गए वंदे मातरम के विषय पर समाजवादी पार्टी के नेता अखिलेश यादव के तर्क का जवाब दिया। मीडिया से बात करते हुए यूपी के उपमुज़्यमंत्री ने कहा कि वंदे मातरम भारत का महान मंत्र है, जिसने हमारे देश को गुलाम बनाने वाले अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई में हमारी मदद की। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष को इस पर टिप्पणी नहीं करनी चाहिए। केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि अखिलेश यादव को उपदेश नहीं देना चाहिए। वंदे मातरम पर चर्चा का अर्थ है भारत के उस महान मंत्र का गायन करना, जिसका नाम मात्र और जिसके जोरदार उच्चारण से ही अंग्रेज

भारत से भाग गए थे। मौर्य ने आगे कहा कि यह वही महान मंत्र है जिसका उद्घोष एक विकसित भारत की ओर ले जाएगा, जहां गरीब अमीर बनेंगे, किसान समृद्ध होंगे, महिलाएं सशक्त होंगी और युवाओं का भविष्य उज्ज्वल होगा। उन्होंने कहा कि सरकार ने विधानसभा के लिए एक उचित निर्णय लिया है और उन्हें उज़्मीद है कि विपक्ष इस पर चर्चा के दौरान अनुशासन बनाए रखेगा। इसके अलावा, उन्होंने कहा कि सरकार विपक्ष के किसी भी प्रश्न का उज़र देने के लिए तैयार है। सरकार विपक्ष द्वारा उठाए गए सभी प्रश्नों का उज़र देने के लिए तैयार है, भले ही उनके व्यवहार से हंगामा हो। इसी बीच, उज़र प्रदेश के कैबिनेट मंत्री सुरेश खन्ना ने भी वंदे मातरम पर हो रही चर्चा को संबोधित किया। उन्होंने स्वतंत्रता सेनानियों के लिए वंदे मातरम के महत्व और अन्य राज्यों द्वारा इसे अपनाए जाने पर जोर दिया।

कलिंग समाचार
THE KALINGA SAMACHAR
(A Hindi Daily News Paper)
PUBLISHED FROM ODISHA, JHARKHAND & CHATTISHGARH
FOR NEWS AND ADVERTISEMENT CONTACT
AT: QRS. NO. B/204, SECTOR-16
ROURKELA, PH. 0661-2646999
PRAKASH KUMAR DHAL (EDITOR)
E-mail: thekalingasamachar@gmail.com

विविध समाचार

अभिलाष थपलियाल ने तापसी के फिल्मों के चयन को सराहा

अभिनेत्री तापसी पन्नू अपने दमदार अभिनय और शानदार फिल्मों के चयन को लेकर जानी जाती हैं। अब तापसी एक्शन-थ्रिलर फिल्म 'गांधारी' से फिर से दर्शकों का मनोरंजन कर रही हैं। गुरुवार को अभिनेत्री के मित्र और अभिनेता अभिलाष थपलियाल ने सभी से फिल्म को देखने की गुजारिश की। अभिलाष थपलियाल ने इंस्टाग्राम पर अभिनेत्री तापसी पन्नू के साथ कुछ तस्वीरें पोस्ट कीं, जिसमें उन्होंने उनके अभिनय और फिल्मों के चयन की भी सराहना की। अभिनेता ने लिखा, 'अभिनेत्री तापसी पन्नू ने जो फैसले लिए हैं, वो उन्हें इस इंडस्ट्री की हर दूसरी स्टार से अलग बनाते हैं। 'पिंक' से लेकर 'मुल्क', 'थप्पड़', 'मनमर्जियां' और 'अस्सी' तक। उन्होंने हर बार अपने अभिनय से चौंकाया है।'

अभिनेता अभिलाष थपलियाल ने सभी से फिल्म 'गांधारी' देखने की अपील की। अभिनेत्री ने लिखा, "नेटफ्लिक्स पर 'गांधारी' उस अभिनेत्री के लिए जरूर देखें, जो हर बार नया मुकाम बनाती हैं। इंडियन फिल्म इंडस्ट्री की सबसे बेहतरीन और सबसे बहादुर एक्ट्रेस में से एक तापसी पन्नू के नाम।' अभिनेता अभिलाष थपलियाल की पोस्ट को काफी पसंद किया जा रहा है। वहीं, तापसी पन्नू ने भी कमेंट सेक्शन पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने लिखा, 'यहां सर्वाइव करने का एक वीर चक्र होना चाहिए।' अभिनेत्री के इस कमेंट पर अभिलाष ने भी रिप्लाई देते हुए लिखा, 'तापसी पन्नू, माहेश्वरी जी ने लिखा था, और शायद आपके ही लिए होगा, प्रातः हो कि रात हो, संग हो न साथ हो। सूर्य से बढ़े चलो, चंद्र से बढ़े चलो। वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो!' देवाशीष मखीजा द्वारा निर्देशित फिल्म में तापसी पन्नू, इश्वाक सिंह, छाया कदम, मीता वशिष्ठ और स्वास्तिका मुखर्जी मुख्य भूमिका में हैं। फिल्म की कहानी 'बानी' (तापसी पन्नू) नाम की एक मां के इर्द-गिर्द घूमती है, जो अपने पति गोकुल (इश्वाक सिंह) और बेटी मिष्ठी के साथ जॉयपुरा शहर में रहती है। रेलवे स्टेशन पर बानी की बेटी का अपहरण हो जाता है और एक हिंसक हमले में बानी अपनी आंखों की रोशनी भी खो बैठती है। इसके बाद बानी अपनी बेटी को ढूंढने और बाल तस्करों के एक खतरनाक गिरोह का सामना करने के लिए आंखों पर पट्टी बांधकर खुद मैदान में उतरती है।

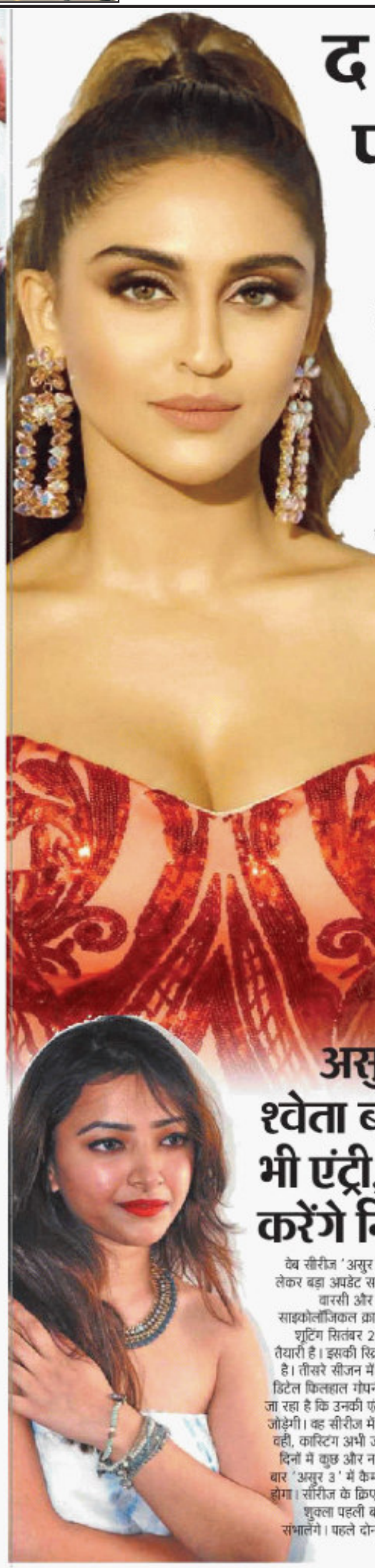

द ट्रेटर्स 2 की जीत पर क्रिस्टल डिसूज़ा ने खोला राज

'द ट्रेटर्स सीजन 2' में क्रिस्टल डिसूजा और रिदा थराना ने अपने खेल से सभी को चौंका दिया। उन्होंने शो में 'ट्रेटर्स' की भूमिका निभाते हुए न सिर्फ कई खिलाड़ियों को गलतफहमी में रखा, बल्कि आखिर तक खुद को बचाए रखा और विजेता बनकर बाहर निकलीं। अब शो के खत्म होने के बाद क्रिस्टल ने बताया है कि शुरुआत से ही उन्हें पता था कि अगर वह किसी सवाल पर जरूरत से ज्यादा सफाई देंगी या खुद को बचाने के लिए बहुत ज्यादा सफाई देने लगेंगी, तो उनका राज खुल सकता है। क्रिस्टल ने अपने अनुभव के बारे में बात करते हुए कहा, ''ट्रेटर' होना सुनने में भले ही बहुत शानदार लगता हो, लेकिन जब आपको हर दिन उन लोगों से झूठ बोलना पड़े, जिन्हें आप सच में पसंद करते हैं, तब इसकी असली मुश्किल समझ आती है। मैं शुरुआत से ही ट्रेटर थी और इसलिए मुझे जल्दी समझ आ गया था कि ज्यादा बोलना या किसी आरोप पर तुरंत सफाई देना मुझे सबकी नजरों में ला सकता है।'

क्रिस्टल के कहा, ''इसी वजह से मैंने यह सीखने की कोशिश की कि कब बोलना है, कब चुप रहना है और कब सिर्फ मुस्कुराकर पीछे बैठ जाना है। शो के दौरान मुझ पर शक भी हुआ, आरोप भी लगे और कई बार दूसरे कंटेस्टेंट्स ने मुझे मुश्किल में डालने की कोशिश भी की, लेकिन मैं किसी तरह हर बार मुश्किल से निकलती चली गई।''

जब शो शुरू हुआ था, तब कुल 21 प्लेयर्स पैलेस में पहुंचे थे। इसके बाद कई हफ्तों तक मर्डर, धोखे, गलत थ्योरी और एक-दूसरे पर शक का खेल चलता रहा। 'शक के घेरे' के दौरान प्लेयर्स लगातार यह पता लगाने की कोशिश करते रहे कि आखिर उनके बीच कौन ट्रेटर है। जैसे-जैसे खेल आगे बढ़ा, एक-एक करके खिलाड़ी बाहर होते गए और आखिर में छह लोग बचे। फिनाले तक मल्लिका शेरावत, साहिल सलाथिया, दलीप ताहिल, शालिनी पासी, क्रिस्टल डिसूज़ा और रिदा थराना ही खेल में टिके रहे। इन सभी को लगा कि उन्होंने पैलेस के सबसे बड़े धोखे को पीछे छोड़ दिया है। लेकिन फिनाले में क्रिस्टल और रिदा ने खुद को ट्रेटर बताकर पूरे खेल का सबसे बड़ा राज खोल दिया। दोनों की यह जोड़ी आखिरकार जीत तक पहुंची।

रिदा थराना ने भी अपनी जीत को लेकर कहा, ''अगर किसी ने मुझे पहले दिन बताया होता कि मैं इस गेम को एक ट्रेटर के तौर पर खत्म करूंगी, तो मैं हंस पड़ती। मैं शुरुआत में इनोसेंट प्लेयर बनकर खेलना चाहती थी, क्योंकि मुझे लगता था कि मैं झूठ नहीं बोल सकती। लेकिन बाद में पूरा खेल बदल गया।'' रिदा ने कहा, ''ट्रेटर बनने के बाद मेरे पास फिनाले तक पहुंचने की प्लानिंग थी, लेकिन सबसे मुश्किल हिस्सा उन लोगों के खिलाफ खेलना था, जिनकी मैं सच में परवाह करती थी।

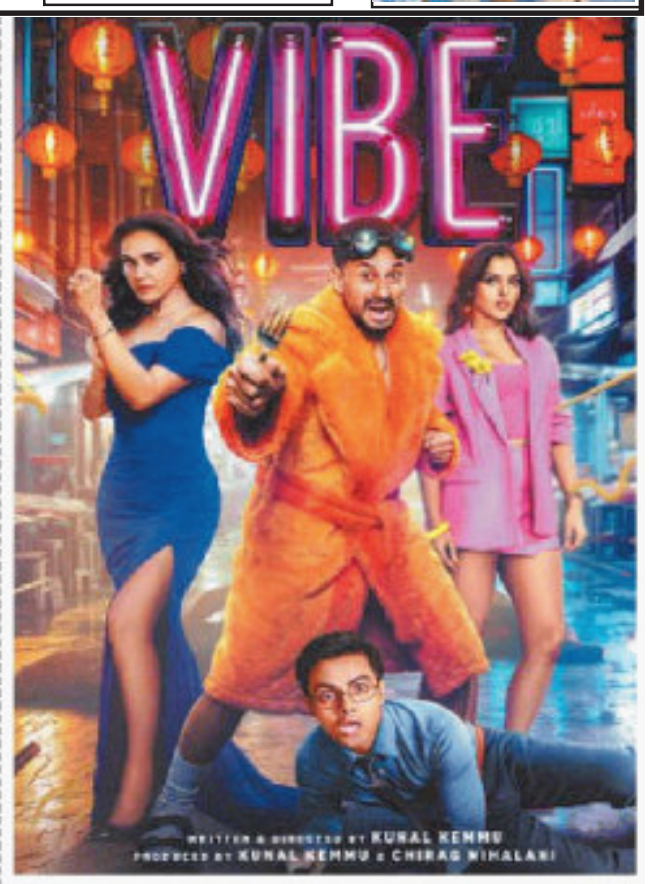

'वाइब': अनचाहे मिशन पर निकलेंगे कुणाल खेमू और स्पर्श श्रीवास्तव

कुणाल खेमू ने अपनी अगली फिल्म 'वाइब' का ट्रेलर रिलीज किया। यह एक एक्शन कॉमेडी फिल्म है जिसमें खुद कुणाल भी प्रीति जिंटा और स्पर्श श्रीवास्तव के मुख्य किरदारों में है। फिल्म 'वाइब' के ट्रेलर में कॉमेडी और एक्शन दोनों ही सामान्य मात्रा में परोसे गए हैं। कुणाल खेमू की कॉमेडी और स्पर्श श्रीवास्तव के सुलझे हुए अभिनय के साथ अभिनय करते नजर आएंगे। यह फिल्म फैंस का मनोरंजन कर सकती है। फिल्म वाइब के 2 मिनट 44 सेकंड के ट्रेलर में रोमांस और कॉमेडी को दिखाया गया है। ट्रेलर में बताया कि कहानी दो दोस्तों हार्दिक (कुणाल खेमू) और बग्स (स्पर्श श्रीवास्तव) की है। बेपरवाह जिंदगी जीने वाले इन दोस्तों को पता चलता है कि देश एक बड़े खतरे का सामना करने वाला है। इस खतरे से निपटने के लिए

दोनों को एक मिशन में शामिल किया जाता है, जिसका यह दोनों ही हिस्सा नहीं बनना चाहते। फिल्म में प्रीति जिंटा हार्दिक और बग्स की बॉस बनी हैं। वो भी इसमें एक्शन करती नजर आएंगी। दूसरी तरफ अभिनेत्री वंशिका धीर, कुणाल के साथ रोमांस करती दिखेंगी। इस ट्रेलर में कुणाल की रियल लाइफ सास और दिग्गज अभिनेत्री शर्मिला टैगोर की भी झलक है। स्पाई वर्ल्ड में कॉमेडी का मसाला 'वाइब' के ट्रेलर में स्पाई वर्ल्ड से प्रेरित कहानी को कॉमेडी में लपेट कर दिखाया गया है। कुणाल के लिए यह दूसरी फिल्म है जिसका वह निर्देशन करेंगे। 'लापता लेडीज' में एक गंभीर किरदार निभाने के बाद स्पर्श श्रीवास्तव पहली बार कॉमेडी रोल में दिखाई देंगे। प्रीति जिंटा की तो 'बटवारा 1947' के बाद यह रोल उनके लिए भी कुछ नया है।

कब रिलीज होगी 'वाइब'

फिल्म 'वाइब' का लेखन और निर्देशन दोनों कुणाल खेमू ने किया है। इसका निर्माण भी कुणाल खेमू, चिराग निहलानी के साथ मिलकर डोगो फिल्म्स के बैनर तले कर रहे हैं। यह फिल्म 18 सितंबर 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

असुर 3 में श्वेता बसु की भी एंट्री, गौरव करेंगे निर्देशन

वेब सीरीज 'असुर' के तीसरे सीजन को लेकर बड़ा अपडेट सामने आया है। अरशद वारसी और बरुण सोबती की इस साइकोलॉजिकल क्राइम थ्रिलर सीरीज की शूटिंग सितंबर 2026 से शुरू होने की तैयारी है। इसकी स्क्रिप्ट भी लॉक हो चुकी है। तीसरे सीजन में श्वेता के किरदार की डिटेल फिलहाल गोपनीय रखी गई है। माना जा रहा है कि उनकी एंट्री कहानी में नई परत जोड़ेगी। वह सीरीज में नया सस्पेंस जोड़ेंगी। वहीं, कास्टिंग अभी जारी है और आने वाले दिनों में कुछ और नाम सामने आएंगे। इस बार 'असुर 3' में कैमरे के पीछे भी बदलाव होगा। सीरीज के क्रिएटर और राइटर गौरव शुक्ला पहली बार निर्देशन की कमान संभालेंगे। पहले दोनों सीजन ओनी सेन ने निर्देशित किए थे।

फेम वेदिका पिंटो को मिली प्रोसीत रॉय की अगली फिल्म

मुंबई 'मुसाफिर कैफे' में अपनी एक्टिंग से ध्यान खींचने वाली वेदिका पिंटो अब लक्ष्य के साथ स्क्रीन पर एकदम फ्रेश जोड़ी के रूप में नजर आने वाली हैं। एक्ट्रेस इस नई कहानी में अपने किरदार के जरिए एक नया और एक्साइटिंग रंग भरने के लिए तैयार हैं। 'राख' से अपनी खास पहचान बनाने के बाद फिल्ममेकर प्रोसीत रॉय अब अपनी अगली डायरेक्टोरियल फिल्म लेकर आ रहे हैं। इस अनटाइटल्ड फिल्म में लक्ष्य के साथ वेदिका पिंटो लीड रोल में दिखाई देंगी। कहा जा रहा है कि यह कोई टिपिकल रोमांस नहीं, बल्कि प्यार के साथ साइकोलॉजिकल ट्विस्ट का ऐसा कॉकटेल है, जो कहानी को काफी इंट्रिगिंग बनाने वाला है। 'किल', 'चांद मेरा दिल' और 'द बा**ड्स ऑफ बॉलीवुड' जैसे अलग-अलग प्रोजेक्ट्स में अपनी वर्सेटिलिटी दिखा चुके लक्ष्य अब इस फिल्म में एक और ज्यादा लेयर्ड और अनप्रेडिक्टेबल किरदार एक्सप्लोर करते नजर आएंगे। यानी इस बार लक्ष्य का अंदाज होगा थोड़ा हटके और कहानी होगी उससे भी ज्यादा सरप्राइजिंग! अपने डिस्टिंक्टिव स्टोरीटेलिंग स्टाइल के लिए पहचाने जाने वाले प्रोसीत रॉय इस बार रोमांस को साइकोलॉजिकल ट्विस्ट के साथ पेश करने वाले हैं।

एक्ट्रेस मेधा शंकर को डेट कर रहे समय रैना?

विक्रांत मैसी के साथ '12वीं फेल' से दर्शकों के दिलों में जगह बनाने वाली एक्ट्रेस मेधा शंकर एक बार फिर से समय रैना की वजह से चर्चा में हैं। मेधा समय रैना के शो 'इंडियाज गॉट लेटेंट' में पहुंचीं। हाल ही में वो इस शो में पैनलिस्ट की लाइन में नजर आईं, जहां वरुण धवन भी इस पैनल का हिस्सा थे। मेधा को देखते ही सोशल मीडिया पर पुरानी चर्चा फिर से चेज हो गई। बता दें कि पिछले कुछ समय से मेधा शंकर और समय रैना के रिश्ते की काफी चर्चा है। दोनों कई मौकों पर साथ भी दिखे हैं। हाल ही में दोनों एक ही फ्लाइट में सफर करते भी दिखे थे। हालांकि, दोनों में से किसी ने अब तक इस रिश्ते को लेकर कुछ भी नहीं कहा है। पिछले कुछ दिनों में इंडियाज गॉट लेटेंट विवादों से दूर नहीं रहा है।

मेधा शंकर 'इंडियाज गॉट लेटेंट' के पैनल में शामिल हुईं

'इंडियाज गॉट लेटेंट' के लेटेस्ट एपिसोड में मेधा शंकर की मौजूदगी ने दर्शकों का ध्यान खींचा। एपिसोड और उससे जुड़े वीडियो ऑनलाइन सामने आने के बाद सोशल मीडिया यूजर्स ने उनकी मौजूदगी को समय रैना के साथ चल रही डेटिंग की अफवाहों से जोड़ना शुरू कर दिया। सोशल मीडिया पर कई यूजर्स ने मेधा के शो में आने पर रिएक्शन्स दीए। एक यूजर ने कमेंट किया 'अरे रुको!! मुझे मेधा पैनल में दिख रही है।' इन रिएक्शन्स के बाद दोनों के रिश्ते को लेकर चर्चाएं और बढ़ गईं।

समय रैना और मेधा शंकर को कई बार साथ देखा गया

रिपोर्ट्स के मुताबिक, समय रैना और मेधा शंकर को हाल ही में एक ही फ्लाइट में सफर करते हुए देखा गया। इसके अलावा दोनों मुंबई एयरपोर्ट पर भी साथ नजर आए। यह पहली बार नहीं है जब दोनों को एक साथ देखा गया हो। जुलाई में भी उन्हें कई कार्यक्रमों में साथ देखा गया था। हालांकि, बार-बार साथ नजर आने के बावजूद मेधा शंकर और समय रैना ने अपने रिश्ते को लेकर कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया है। दोनों ने डेटिंग की खबरों पर अब तक सार्वजनिक रूप से प्रतिक्रिया देने से भी परहेज किया है।

इंडियाज गॉट लेटेंट में कश्मीरी-बिहारी जोक पर बवाल

पिछले कुछ दिनों में इंडियाज गॉट लेटेंट एक बार फिर अपने कंटेंट और उससे जुड़े विवादों को लेकर चर्चा में रहा है। हाल ही के एक एपिसोड में शेरोन वर्मा बतौर पैनलिस्ट नजर आई थीं। इस दौरान कश्मीरी-बिहारी जोक को लेकर सोशल मीडिया पर जमकर बवाल हुआ और कई यूजर्स ने शो के कंटेंट पर सवाल उठाए। विवाद के बीच एपिसोड के कुछ हिस्से सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हुए, जिसके बाद शो और इससे जुड़े लोगों को लेकर ऑनलाइन चर्चाएं तेज हो गईं। वहीं, शेरोन वर्मा का नाम समय रैना के साथ भी जोड़ा जा चुका है। दोनों को साथ में नजर आने और सोशल मीडिया पर सामने आई वर्वाओं के बाद उनके रिश्ते को लेकर डेटिंग की अफवाहें उड़ी थीं। हालांकि, समय और शेरोन दोनों ने सार्वजनिक तौर पर इस रिश्ते को लेकर कुछ भी नहीं कहा है।

जून में हुआ था 'इंडियाज गॉट लेटेंट सीजन 2' का प्रीमियर

'इंडियाज गॉट लेटेंट' के दूसरे सीजन का प्रीमियर जून में हुआ था। शो का फाइनल एपिसोड 20 जून को शाम 7 बजे प्रसारित किया गया। नए सीजन में भी शो का वही अनोखा कॉमेडी फॉर्मेट देखने को मिल रहा है, जिसमें प्रतियोगियों, मेहमानों और पैनलिस्ट्स के बीच मजेदार और अप्रत्याशित बातचीत होती है। वहीं, मेधा शंकर की बात करें तो वह '12वीं फेल' में अपने अभिनय के लिए काफी लोकप्रिय हुई थीं। उनकी पिछली फिल्म रोमांटिक कॉमेडी 'मिन्नी वैड्स सन्नी 2' बताई जा रही है।

कलिंग समाचार

संपादकीय

अंजाम-ए-गुलिस्तां क्या होगा

नेशनल मेडिकल कमीशन ने जमू-कश्मीर के रियासी में स्थित श्री माता वैष्णो देवी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एक्सीलेंस की मान्यता रद्द कर दी। इस खबर को पढ़ते ही शौक़ बहराइची का मशहूर शेर याद आ गया कि- बर्बाद गुलिस्तां करने को बस एक ही उल्लू काफ़ी था। हर शाख़ पे उल्लू बैठा है अंजाम-ए-गुलिस्तां क्या होगा।। देश में पहले से अच्छे उच्च शिक्षा संस्थानों की भारी कमी है। धार्मिक स्थलों के निर्माण, सौंदर्यीकरण, रख-रखाव पर अरबों रुपए खर्च किए जाते हैं, सरकार में बैठे लोगों का रोजमर्रा का खर्च लाखों में होता है, फिजूल के प्रचार कार्यक्रमों में करोड़ों रुपए खर्च कर दिए जाते हैं, लेकिन जब उच्च कोटि के अस्पतालों और शिक्षा संस्थानों के निर्माण और उन्नयन की बारी आती है तो सरकार के पास धन की कमी दिखाई जाती है। छात्रों को पढ़ने और शोध कार्यों के लिए आसानी से धन मुहैया कराने की जगह सरकार का ध्यान शिलान्यासों और हरी झंडी दिखाने में लगा रहता है। ऐसे में एक मेडिकल कॉलेज की मान्यता रद्द कर देना ऐसा फैसला है, जिस पर सिर ही पीटा जा सकता है। मान्यता रद्द करने के पीछे मानकों का पालन न होने को कारण बताया जा रहा है। लेकिन असल मुद्दा यही है कि पिछले काफी वक्त से इस मेडिकल कॉलेज में मुस्लिम छात्रों को मिले दाखिले पर हिंदू संगठन आपत्ति जता रहे थे और इसके लिए बाकायदा संघर्ष समिति बनाकर आंदोलन किया जा रहा था। दरअसल इस मेडिकल कॉलेज के पहले एमबीबीएस बैच के 50 छात्रों में से 42 मुस्लिम, एक सिख और केवल 8 हिंदू छात्र ज मू क्षेत्र से होने की जानकारी सामने आई थी। अधिकतर छात्र कश्मीर से थे। इसी पर हिंदूवादी संगठन हंगामा मचा रहे थे कि जब मेडिकल कॉलेज हिंदुओं के दिए दान से चल रहा है, तो उसमें मुस्लिम छात्रों को दाखिला क्यों दिया जा रहा है। आंदोलनकारी बाकायदा कॉलेज को बंद करने की मांग ही कर रहे थे। जो अब शायद मानकों के बहाने से पूरी कर दी गई है। ज मू-कश्मीर के मु यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने इस फैसले पर निराश होते हुए कहा है कि उन बच्चों ने मेहनत करके सीट हासिल की है, यह किसी का उन पर एहसान नहीं है- न मेरा, न यूनिवर्सिटी का। उन्होंने परीक्षा पास करके सीट प्राप्त की है। अब अगर आप उन्हें वहां नहीं पढ़ाना चाहते, तो कहीं और उनका इंतजाम कीजिए। वे किसी के एहसान पर नहीं आए हैं। वहीं महबूबा मु ती ने कहा कि बीमारी का इलाज करने के बजाय, मरीज को बिना किसी गलती के दंडित किया जा रहा है। अधिक चिंताजनक बात यह है कि यदि एसएमवीडी जैसे प्रतिष्ठित संस्थान के साथ ऐसा किया जा सकता है, तो इसे अन्य जगहों पर भी दोहराया जा सकता है, जिससे मेहनती युवाओं का भविष्य गंभीर खतरे में पड़ जाएगा। गौरतलब है कि नेशनल मेडिकल कमीशन (एनएमसी) ने एसएमवीडी से एमबीबीएस कोर्स चलाने की इजाजत वाले आदेश को वापस ले लिया है। इसके बाद से ही छात्र और उनके शिक्षक चिंतित हैं। फैकल्टी सदस्यों ने आरोप लगाया कि हिंदुत्ववादी संगठनों के आंदोलन ने एनएमसी के फैसले को प्रभावित किया है। बता दें कि 2 जनवरी को एनएमसी ने संस्थान का औचक निरीक्षण किया और महज 15 मिनट में फैसला लिया कि 2025-26 सत्र के लिए एमबीबीएस कोर्स चलाने के लिए दी गई अनुमति वापस ली जाती है। एक बयान में कहा गया है कि यह फैसला अधोसंरचना में गंभीर कमियों के आधार पर लिया गया है। मेडिकल एजुकेशन रेगुलेटर के अनुसार, पिछले दो ह तों में खराब इंफ्रास्ट्रक्चर, क्लिनिकल मटीरियल की कमी और फैकल्टी एवं रेजिडेंट डॉक्टरों की कमी की कई शिकायतें मिलने के बाद यह कार्रवाई की गई। बोर्ड ने मंगलवार को एक आदेश जारी किया। रिपोर्ट के अनुसार कॉलेज में शिक्षकों की सं या करीब 39 प्रतिशत कम थी। ट्यूटर, डेमोंस्ट्रेटर और सीनियर रेजिडेंट डॉक्टर भी 65 प्रतिशत कम मिले। मरीजों की सं या भी निर्धारित मानकों से काफी कम मिली। दोपहर 1 बजे तक ओपीडी में सिर्फ 182 मरीज मौजूद थे, जबकि कम से कम 400 मरीज होने चाहिए थे। अस्पताल में केवल 45 प्रतिशत बेड पर मरीज थे, जबकि मानक 80 प्रतिशत का है। आईसीयू में भी क्षमता से आधे मरीज थे।

देश की सुरक्षा से खिलवाड़ करते प्रधानमंत्री

सर्वमित्रा सुरजन

संभावित टकराव वाले क्षेत्रों की निगरानी की जा रही थी। लेकिन निर्णायक बिंदु रेचिन ला था। नरवणे ने रक्षा मंत्री को एक और फोन किया, जिन्होंने वापस कॉल करने का वादा किया। समय खिंचता गया। हर मिनट चीनी टैंकों के शिखर तक पहुंचने के और करीब ले जा रहा था। रात 10:30 बजे राजनाथ सिंह का फोन आया। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से बात की थी लोकतांत्रिक परंपराओं और प्रधानमंत्री जैसे महत्वपूर्ण पद की जि मेदारियों को कैसे नकारा जाता है, इसकी ताजा मिसाल संसद के बजट सत्र में नरेन्द्र मोदी ने पेश की। राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा के लिए लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने जब अपनी बात रखना चाही, तो उन्हें बार-बार टोका गया और संसदीय इतिहास में शायद पहली बार ऐसा हुआ है कि नेता प्रतिपक्ष का भाषण पूरा ही नहीं हुआ। पहले सोमवार 2 फरवरी को राहुल गांधी ने पूर्व सेनाध्यक्ष जनरल मनोज मुकुंद नरवणे की किताब फोर स्टार्स ऑफ डेस्टिनी से कुछ अंश सदन में पढ़ने चाहे, तो उन्हें नियम 349 का हवाला देकर टोका गया। इसके बाद राहुल गांधी का भाषण अधूरा ही रह गया, इसके बाद 3 फरवरी को भी राहुल गांधी ने अपनी बात सदन में रखना चाही, लेकिन उन्हें फिर बोलने नहीं दिया गया। सोमवार को जब राहुल गांधी ने अपना भाषण शुरु किया और राष्ट्रपति के भाषण का उल्लेख करते हुए राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे पर आए, वैसे ही सत्ता पक्ष में हलचल दिखने लगी। राहुल के भाषण के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह तीनों मौजूद थे। उन्हें शायद अंदेशा हुआ कि अब राहुल गांधी कुछ ऐसा बोल जाएंगे, जिससे मोदी की दिखावटी 56 इंची वाली बहादुरी की पोल खुल जाएगी। इसलिए जैसे ही राहुल गांधी ने चीन का नाम लिया, सत्ता पक्ष की तरफ से हंगामा होने लगा। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला भी सरकार की ढाल बनकर खड़े हो गए। ओम बिड़ला राहुल गांधी को बार-बार याद दिलाने लगे कि संसद की मर्यादा कैसे बना कर रखी जाए और उन्हें नियमों के हिसाब से ही चलना पड़ेगा।

जानकारी के लिए बता दूं कि लोकसभा की नियम पुस्तिका का नियम 349 सदन के भीतर सदस्यों के आचरण और मर्यादा से संबंधित है। नियम कहता है कि सदस्य सदन में नारे नहीं लगा सकते और न ही किसी तरह का प्रदर्शन कर सकते हैं। इस नियम की उपधारा एक में कहा गया है कि कोई भी सदस्य किसी अखबार की क्लिपिंग या मैगजीन में प्रकाशित अंश, कोई पुस्तक के अंश सदन में नहीं पढ़ सकते। इसके अलावा सदन के भीतर झंडे, प्रतीक चिन्ह, पोस्टर, त तयां या धार्मिक चित्र दिखाना वर्जित है। लेकिन अगर कोई सदस्य किसी प्रकाशित अंश को सत्यापित यानी वेरिफाई करे तो फिर उसमें समस्या नहीं है। राहुल गांधी ने अगले दिन मंगलवार को अपने हस्ताक्षर के साथ उस अंश को सत्यापित करके आसंदी को सौंपा ताकि उन्हें अपना भाषण पूरा करने दिया जाए। लेकिन तब भी उन्हें बीच में ही रोका गया और उनके बाद जिन सदस्यों के नाम भाषण देने के लिए सूची में थे, उन्हें पुकारा गया। हालांकि विपक्ष ने पूरी एकता दिखाई और एक भी सांसद भाषण देने के लिए खड़ा नहीं हुआ तो फिर आसंदी ने सत्ता पक्ष के लोगों को मौका दे दिया। संसद के भीतर खुली बेईमानी की गई, लेकिन पूरी भाजपा राहुल गांधी पर देश विरोधी काम करने का आरोप लगा रही है। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला भी पक्षपात के नए मापदंड स्थापित कर रहे हैं। क्योंकि जिस नियम के तहत राहुल गांधी को बोलने से रोका गया, वो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर लागू नहीं हुआ।.द्यह्मश ऋद्भड्डस्र - मिशन-500 या कूटनीतिक आत्मसमर्पण? भारत-अमेरिका डील के अनकहे पहलू संसद के कुछ पुराने वीडियो सामने आए हैं, जिनमें प्रधानमंत्री मोदी कु छ किताबों का उदाहरण देकर भाषण दे रहे हैं और ओम बिड़ला मुस्कुराते हुए उन्हें सुन रहे हैं। बुधवार को भी भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने कम से कम छह किताबों का हवाला अपने भाषण में दिया और उन्हें रोका नहीं गया। लेकिन सारे नियम राहुल गांधी पर लागू किए गए। दरअसल इसके पीछे मोदी सरकार का डर छिपा है कि चीन के अतिक्रमण पर जितनी लापरवाही और डर दिखाया गया, उसकी सच्चाई जनता के सामने आ जाएगी। मनोज नरवणे की किताब का जो अंश कारवां पत्रिका में छपा है और जिसे राहुल गांधी पढ़ना चाहते थे, उसमें बताया गया है कि 2020 में चीन के अतिक्रमण के वक्त जब भारत को तत्काल जवाबी कार्रवाई करनी चाहिए थी और जिसके लिए हमारी सेना सक्षम थी, तब शीर्ष नेतृत्व यानी प्रधानमंत्री मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह समेत तमाम लोगों ने तत्काल फैसला नहीं लिया, जिसका नुकसान देश को हुआ। मनोज नरवणे ने उन तथ्यों को किताब में लिख दिया। इसलिए सरकार घबरा रही है कि उसकी कमज़ोरी बाहर आ जाएगी। बता दूं कि रक्षा मंत्रालय ने इस किताब को प्रकाशित करने की अनुमति नहीं दी, हालांकि बुधवार को राहुल गांधी इस किताब को संसद में लेकर आए और उन्होंने बताया कि यह संभवतः विदेश में प्रकाशित हुई है। राहुल ने दावा किया था कि अगर प्रधानमंत्री आज संसद में आएं तो मैं खुद उन्हें यह किताब दूंगा, लेकिन वे नहीं आएंगे। और ऐसा ही हुआ, बुधवार को प्रधानमंत्री संसद में नहीं पहुंचे।

बता दें कि कारवां पत्रिका के मुताबिक इस किताब में जनरल नरवणे ने लिखा हैः भारतीय सेना की उत्तरी कमान के प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल योगेश जोशी को 31 अगस्त 2020 की रात 8:15 बजे एक फोन कॉल मिला कि चार चीनी टैंक, पैदल सेना के साथ, पूर्वी लद्दाख में रेचिन ला की ओर जाने वाले एक खड़ी पहाड़ी रास्ते पर चढ़ते हुए आगे बढ़ने लगे थे। जोशी ने इस गतिविधि की सूचना फौरन सेना प्रमुख जनरल मनोज मुकुंद नरवणे को दी। ये टैंक कैलाश रेंज पर भारतीय ठिकानों से कुछ ही सौ मीटर की दूरी पर थे। भारतीय सैनिकों ने एक इल्यूमिनेटिंग राउंड दागा, जो चेतावनी थी। इसका कोई असर नहीं हुआ। चीनी आगे बढ़ते रहे। नरवणे ने बताया कि उन्होंने भारत के राजनीतिक और सैन्य नेतृत्व के शीर्ष लोगों को फोन करने शुरू किए। जिनमें रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन रावत और विदेश मंत्री एस. जयशंकर शामिल थे।

नरवणे ने अपनी अप्रकाशित आत्मकथा फोर स्टार्स ऑफ डेस्टिनी में लिखा, हर एक से मेरा सवाल था- %मेरे लिए क्या आदेश हैं? स्थिति तेजी से बिगड़ रही थी और स्पष्ट निर्देशों की मांग कर रही थी। लेकिन नरवणे को स्पष्ट आदेश थे कि %ऊपर से मंजूरी मिलने तक गोली न चलाई जाए। उनके वरिष्ठों की ओर से कोई स्पष्ट निर्देश नहीं मिला। मिनट बीतते गए। रात 9:10 बजे ले.जन. जोशी ने फिर फोन किया। चीनी टैंक आगे बढ़ते रहे और अब दर्रे से एक किलोमीटर से भी कम दूरी पर थे। रात 9:25 बजे नरवणे ने फिर राजनाथ सिंह को फोन कर स्पष्ट निर्देश' मांगे। कोई जवाब नहीं मिला। इसी बीच, पीएलए कमांडर मेजर जनरल ल्यू लिन का संदेश आया। उन्होंने तनाव कम करने का प्रस्ताव रखा कि दोनों पक्ष आगे की गतिविधि रोक दें और स्थानीय कमांडर अगले दिन सुबह 9:30 बजे दर्रे पर मिलें, दोनों ओर से तीन-तीन प्रतिनिधि हों। यह एक उचित प्रस्ताव लग रहा था। कुछ देर के लिए ऐसा लगा कि टकराव से निकलने का रास्ता बन रहा है। रात 10 बजे नरवणे ने यह संदेश राजनाथ सिंह और अजित डोभाल तक पहुंचाया। दस मिनट बाद उत्तरी कमान से फिर फोन आया। चीनी टैंक नहीं रुके थे। वे अब शिखर से मात्र पांच सौ मीटर दूर थे। नरवणे को याद है कि जोशी ने कहा, %उन्हें रोकने का एकमात्र तरीका हमारी अपनी मध्यम तोपखाने से फायर खोलना है, जो तैयार और तैनात है।% लेकिन पीएलए के साथ तोपखाने की भिड़ंत कहीं बड़े संघर्ष में बदल सकती थी। नरवणे लिखते हैं, %मेरी स्थिति बेहद नाजुक थी।% एक तरफ %कमांड थी जो हर संभव साधन से फायर खोलना चाहती थी, और दूसरी तरफ सरकार की एक कमेटी थी जो अब तक मुझे स्पष्ट कार्यकारी आदेश नहीं दे पाई थी।% सेना मु यालय के ऑपरेशन रूम में विकल्पों पर विचार हो रहा था और उन्हें खारिज किया जा रहा था। पूरा उत्तरी मोर्चा हाई अलर्ट पर था। संभावित टकराव वाले क्षेत्रों की निगरानी की जा रही थी।

लेकिन निर्णायक बिंदु रेचिन ला था। नरवणे ने रक्षा मंत्री को एक और फोन किया, जिन्होंने वापस कॉल करने का वादा किया। समय खिंचता गया। हर मिनट चीनी टैंकों के शिखर तक पहुंचने के और करीब ले जा रहा था। रात 10:30 बजे राजनाथ सिंह का फोन आया। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से बात की थी, जिनका निर्देश एक ही वाक्य में था- %जो उचित समझो, वह करो।% अब यह तय था कि फैसला %पूरी तरह सैन्य% स्तर पर होना था। नरवणे याद करते हैं, मुझे मुश्किल हालात में डाल दिया गया था। इस पूरी छूट के साथ अब पूरी जि मेदारी मेरे ऊपर थी।% रात सवा आठ बजे से साढ़े दस बजे तक का वह समय कितना संघर्ष और तनावपूर्ण रहा होगा, यह बात सेना के लोग ही बेहतर समझ सकते हैं। कोई आश्चर्य नहीं कि इस सनसनीखेज खुलासे से डरी मोदी सरकार इस किताब को प्रकाशित करने से रोक रही है। दो-ढाई घंटे सीमा पर सेना को अटकाए रखना, देश की सुरक्षा के साथ बड़ा खिलवाड़ है। और ये खेल नरेन्द्र मोदी ने क्यों किया, इसका जवाब उन्हें प्रधानमंत्री होने के नेता देश को देना चाहिए। लेकिन इसकी जगह मोदी एंड कंपनी इस साजिश में लगी है कि राहुल गांधी को ही बोलने न दिया जाए। हालांकि राहुल गांधी संसद में जो बात नहीं बोल सके, वो अब पूरे देश को पता चल गई है। ऑपरेशन सिंदूर के वक्त भी नरेन्द्र मोदी ने देश को ऐसे ही उलझाए रखा था। सैन्य वर्दी पहनकर अपनी आदमकद तस्वीरें चौराहों पर लगवाकर मोदी अपना प्रचार करते हैं, सेना का इस्तेमाल चुनावी प्रचार के लिए कर लेते हैं, लेकिन देश को बार-बार दांव पर लगा देते हैं। याद कीजिए कि गलवान के बाद मोदी ने कहा था कि न कोई आया था, न आएगा। तब चीन से सारे संबंध तोड़ने के दावे थे। अब चीन की सत्तारूढ़ पार्टी के साथ भाजपा बैठकें करती हैं और राहुल गांधी सदन में चीन का नाम लें, तो उसे देशविरोधी काम बताती है।

भारत-अमेरिका व्यापार समझौते की स्थिति को लेकर भ्रम की स्थिति

नित्य चक्रवर्ती

किसी भी व्यापारिक समझौते में हमेशा लेन-देन होता है। इसलिए, अमेरिका से ऐसी रियायतें पाने के लिए भारत की तरफ से कुछ रियायतें देने में कुछ भी गलत नहीं है, जो राष्ट्रीय हितों के लिए भारत के लिए ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं। लेकिन बातचीत बराबरी के आधार पर होनी चाहिए क्योंकि भारत, वह भारत है, जो एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था है भारत-अमेरिका व्यापार समझौते पर घोषणा की उ मीद थी, लेकिन जिस तरह से राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दोनों ने सोशल मीडिया पर ऐसा किया, उससे बड़ा भ्रम पैदा हो गया है। नरेंद्र मोदी के साथ फोन पर बातचीत के बाद, ट्रंप ने सोमवार को दावा किया कि अमेरिका ने भारत के साथ एक व्यापार समझौता किया है, जिसके तहत उन्होंने भारतीय उत्पादों पर लगाए गए दंडात्मक टैरिफ को 25 प्रतिशत से घटाकर 18 प्रतिशत कर दिया है, जिसके बदले में भारत कुछ अमेरिकी सामान पर अपने टैरिफ कम करेगा, अधिक अमेरिकी उत्पाद खरीदेगा, और रूसी तेल की खरीद बंद कर देगा।

सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में, मोदी ने लिखा कि वह टैरिफ में कमी से %खुश% हैं, लेकिन उन्होंने विवरण नहीं दिया, जिसमें यह भी शामिल नहीं था कि क्या उनका देश रूसी तेल खरीदना बंद कर देगा जैसा कि ट्रंप ने दावा किया था। उन्होंने यह भी नहीं बताया कि व्यापार समझौता अंतिम रूप से तय हो गया है। मोदी ने लिखा, %जब दो बड़ी अर्थव्यवस्थाएं और दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र एक साथ काम करते हैं, तो इससे हमारे लोगों को फायदा होता है और आपसी लाभकारी सहयोग के लिए अपार अवसर खुलते हैं।

भारत-अमेरिका डील के अनकहे पहलू मोदी ने यह भी नहीं बताया जो ट्रंप ने कहा कि भारत 500अरब डॉलर से अधिक अमेरिकी ऊर्जा, प्रौद्योगिकी, कृषि, कोयला, और कई अन्य उत्पादों के अलावा, अमेरिकी सामान खरीदने के लिए बहुत उच्च स्तर पर प्रतिबद्ध है, और यह कि भारत संयुक्त राज्य अमेरिका के खिलाफ अपने टैरिफ और गैर-टैरिफ बाधाओं को कम करके शून्य पर लाने के लिए आगे बढ़ेगा।% फोन पर बातचीत के बाद अमेरिकी और भारतीय नेताओं द्वारा जारी किए गए बयानों के लहजे में एक ध्यान देने योग्य अंतर था। नई दिल्ली में भाजपा और सरकारी हलकों में काफी उत्साह था। हर कोई भारतीय सरकार की तरफ से विस्तृत जानकारी की उ मीद कर रहा था, लेकिन कुछ भी सामने नहीं आया। यहां तक कि अपनी पार्टी के सांसदों की बैठक में भी, मोदी ने अधिक विवरण नहीं दिया, सिवाय इसके कि भारत की ओर से धैर्य रखने का फल मिला।

सटीक स्थिति क्या है? सरकारी सूत्र वाशिंगटन से अधिक विवरण की प्रतीक्षा करने के अलावा और कुछ नहीं बता रहे हैं। यह स्पष्ट है कि ट्रंप ने मौजूदा 50 प्रतिशत जिसमें 25 प्रतिशत जुर्माना भी शामिल है, के मुकाबले पारस्परिक व्यापार दर को घटाकर 18 प्रतिशत करने पर सहमति व्यक्त की है। ट्रंप के अनुसार, यह तुरंत प्रभाव से लागू होता है। अगर ऐसा है, तो यह भारत के लिए एक बड़ी जीत है, जबकि इसके मुकाबले चीन 37 प्रतिशत, वियतनाम 20 प्रतिशत, बांग्लादेश 20 प्रतिशत और यहां तक कि पाकिस्तान भी 19 प्रतिशत पर है।

लेकिन भारत ने अमेरिका को सोयाबीन, डेयरी और अन्य कृषि उत्पादों के सेक्टर में क्या रियायतें दीं? क्या मोदी ने रूस से सस्ते दाम पर भी तेल का सारा आयात बंद करने पर सहमति दे दी है? पहले भी ट्रंप ने दावा किया था कि भारत ने रूस से खनिज तेल का आयात इंपोर्ट बंद कर दिया है, लेकिन आयातप्रतिस्पर्धी मूल्य के आधार पर हो रहा था। असल में, अभी भी, अन्तरराष्ट्रीय खनिज तेल व्यापार सूत्रों के अनुसार, रूसी कच्चा तेल अमेरिकी कच्चे तेल की तुलना में16डॉलर सस्ता है। अगर भारत रूसी तेल का पूरा आयात बंद कर देता है, तो भारत को यह अतिरिक्त लागत उठानी पड़ेगी। क्या मोदी सच में इसके लिए सहमत हो गए हैं? अगर वह सहमत हो गए हैं, तो उन्हें सामने आकर यह बात खुलकर बतानी चाहिए। आजकल किसी भी व्यापारिक समझौते में हमेशा लेन-देन होता है। इसलिए, अमेरिका से ऐसी रियायतें पाने के लिए भारत की तरफ से कुछ रियायतें देने में कुछ भी गलत नहीं है, जो राष्ट्रीय हितों के लिए भारत के लिए ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं। लेकिन बातचीत बराबरी के आधार पर होनी चाहिए क्योंकि भारत, वह भारत है, जो एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था है और जिसमें 2028 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की क्षमता है, जो चीन को भी पीछे छोड़ देगी। मोदी 1.4 अरब लोगों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं और वह ट्रंप के कहने पर राष्ट्रीय हितों का बलिदान नहीं कर सकते। सवाल यह है कि क्या ट्रंप की शर्तों पर सहमत होते हुए भारत ने अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखी? अगर डील हो गई है, तो प्रधानमंत्री की यह बड़ी ज़ि मेदारी है कि वह डील के बारे में विस्तार से बताएं। या, अगर यह अभी तक फाइनल नहीं हुई है और 18 प्रतिशत टैरिफ सिर्फ एक फ्रेमवर्क है, तो उन्हें यह भी बताना चाहिए। ट्रंप अपने ट्रूथ सोशल पर और भी बहुत कुछ कहते रहेंगे। अगर नरेंद्र मोदी असली स्थिति नहीं बताते हैं, तो वे बातें बिना चुनौती के बनी रहेंगी। यूरोपीय संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ लगातार व्यापार समझौते-एक जिसे सभी ट्रेड डील्स की जननी कहा जा रहा है और दूसरा भारतीय सामान पर टैरिफ को 18 प्रतिशत तक कम करने वाला यह समझौता- से अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलने की व्यापक उ मीद है, जिससे एक दशक में निर्यात में संभावित 150अरब डालर की वृद्धि होगी, ऐसा सरकार के करीबी विशेषज्ञ कहते हैं। ये समझौते टैरिफ कम करेंगे और बाज़ार की बाधाओं को आसान बनाएंगे, साथ ही भारत के मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर को भी बढ़ावा देंगे, जिसमें श्रम-प्रधान टेक्सटाइल सेक्टर भी शामिल है। हालांकि, भारत चीन के मुकाबले अपनी प्रतिस्पर्धी बढ़त के ज़्यादा समय तक बने रहने की उ मीद नहीं कर सकता, क्योंकि ट्रंप इस साल अप्रैल में अमेरिका-चीन व्यापार समझौते को अन्तिम रूप देने के लिए चीन जा रहे हैं और चीन के लिए टैरिफ दर निश्चित रूप से 20प्रतिशत से कम हो जाएगा। यह यूरोपीय यूनियन के 15 प्रतिशत या यूनाइटेड किंगडम के 10प्रतिशत के स्तर पर हो सकता है। इसलिए भारत को बहुत जल्द चीन के मुकाबले अपनी प्रतिस्पर्धी बढ़त को भूलना होगा। 50 प्रतिशत अमेरिकी टैरिफ ने कई चीज़ों पर असर डाला है। इनमें स्टील, टेक्सटाइल और फार्मास्यूटिकल्स जैसे सेक्टर शामिल हैं। उदाहरण के लिए, टैरिफ के बाद अमेरिका को स्टील की शिपमेंट में 40 प्रतिशत की गिरावट आई। यह सेक्टर पुनः सुधार की ओर जा रहा है और यह इस चरण में भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए बहुत मददगार होगा। यह देखना होगा कि भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसके कुल असर का मूल्यांकन करने से पहले भारत-अमेरिका व्यापार समझौते को आखिरकार उसके अन्तिम स्वरूप में आधिकारिक तौर पर कैसे पेश किया जाता है।

विविध समाचार

एसवाईएल विवाद : सीएम सैनी बोले–यह काफी पुराना मुद्दा, 13 अगस्त को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई से पहले फिर होगी बैठक

चण्डीगढ : सतलुज–यमुना लिंक नहर (एसवाईएल) विवाद पर मंगलवार को केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल की अध्यक्षता में हुई बैठक में हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी और पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान के बीच सकारात्मक चर्चा हुई। बैठक के बाद सीएम सैनी ने कहा कि यह लंबे समय से चला आ रहा विषय है। इसको लेकर 9 जुलाई को भी बैठक आयोजित हुई थी, जिसमें काफी सकारात्मक चर्चा हुई। आज उससे एक कदम आगे बढ़कर बातचीत हुई है। 13 अगस्त को इस मसले पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई होनी है। इससे पहले एक बार फिर दोनों मुख्यमंत्री आपस में बैठेंगे और इस मसले पर चर्चा करेंगे। वहीं, भगवंत मान ने कहा कि केंद्र सरकार सिंधु जल संधि को रद्द ही रखे। इसे किसी के दबाव में बहाल मत करे। इतना ही नहीं सिंधु व उसकी सहायक नदियों का पानी भी पंजाब की ओर डायवर्ट कर दिया जाए, क्योंकि पंजाब ही इस पानी को रोक सकता है। यदि ऐसा होता है तो पंजाब न केवल हरियाणा बल्कि राजस्थान को भी जल दे सकता है। दोनों

मुख्यमंत्रियों ने पत्रकारों से कहा कि वे इस मसले पर बहुत ही सकारात्मक वातावरण के साथ सुप्रीम कोर्ट में जाएंगे और जल्द इस मसले का हल भी निकालेंगे। इस बैठक में केंद्रीय सचिव देबाश्री मुखर्जी, मुख्यमंत्री सैनी के मुख्य प्रधान सचिव राजेश खुल्लर, सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव अनुराग अग्रवाल सहित सिंचाई विभाग के कई वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे। सीएम मान ने सिंधु जल संधि को लेकर मजाकिया अंदाज में केंद्र सरकार पर तंज भी कसा। कहा–सिंधु जल संधि पर यदि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप कोई पोस्ट कर दखल न दें तो पंजाब हरियाणा समेत अन्य राज्यों को भी जल देने की स्थिति में आ सकता है। हालांकि सीएम सैनी ने सिंधु जल संधि को दूसरा विषय बताया। मान ने वाईएसएल की थ्योरी पर भी चुटकी ली। उन्होंने कहा कि पंजाब में मौजूदा जल संसाधनों के हालात यदि देखें तो एसवाईएल को छोड़कर अब वाईएसएल (यमुना–सतलुज लिंक नहर) की थ्योरी पर बढ़ना होगा। पंजाब आज सतलुज नहर के जरिये हरियाणा को पानी देने की स्थिति में नहीं है। यमुना का उफान यूपी को डुबोता है, उसके पानी को पंजाब की ओर डायवर्ट करना होगा। इसमें ग्रेविटी भी कोई बाधा नहीं बनेगी और पंजाब सभी पड़ोसी राज्यों को पानी भी दे सकेगा। मुख्यमंत्री मान ने कहा कि सिंधु जल संधि यदि रद्द रहती है तो सहायक नदियों का पानी पंजाब में ही रोका जा सकता है। इसके लिए पंजाब ही फर्स्ट चौनल है, क्योंकि हमारे पास पर्याप्त बांध हैं। इस पानी को पंजाब की ओर डायवर्ट कर भाखड़ा, पौंग, रणजीत सागर और शाहपुर कंडी डैम के जरिये रोका जा सकता है। उसके बाद विभिन्न चौनलों के माध्यम से इसे अन्य प्रदेशों में भेजा जा सकता है। इससे 24 एमएएफ (मिलियन एकड़ फुट) पानी मिल जाएगा जबकि झगड़ा सिर्फ 2–3 एमएएफ का है। मान ने कहा कि आज पहाड़ों पर बादल फट रहे हैं, अत्यधिक पानी से तबाही मच रही है, लिहाजा पानी को संभालने व संचय की जरूरत है।

जब पहाड़ों से ज्यादा पानी आता है तो कहा जाता है कि ये पानी पंजाब संभाले और जब कमी होती है, तो कहा जाता है कि पंजाब पानी नहीं दे रहा। ऐसा अब नहीं चल सकता। मान ने कहा कि हमें तो यह विवाद विरासत में मिला है, इस पर आज तक राजनीति ही होती आई है। अब उम्मीद है मसला हल हो जाएगा।

फिलहाल बिक्रम मजीठिया को राहत नहीं, न बैरक बदली न जमानत मिली

चंडीगढ़ : वरिष्ठ शिअद नेता एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री बिक्रम सिंह मजीठिया को फिलहाल राहत मिलती नहीं दिख रही। उनकी जमानत और जेल में बैरक बदलने की याचिकाओं पर आज मोहाली अदालत में सुनवाई तो हुई, लेकिन कोई फैसला नहीं हो सका।

इसके साथ ही अदालत ने मजीठिया की बैरक स्थानांतरण अर्जी, जो आज के लिए सूचीबद्ध थी, 12 अगस्त तक स्थगित कर दी है। गत शनिवार को मजीठिया की नाभा जेल से वीडियो कांफ्रेंसिंग से पेशी हुई थी। उनकी पिछली 14 दिन की हिरासत की अवधि पूरी हो चुकी थी। इसके बाद अदालत ने सुनवाई कर उन्हें आगे की न्यायिक हिरासत में भेजने के आदेश दिए।

दिग्विजय चौटाला को पुलिस ने हिरासत में लिया, कहा– भुगतना पड़ेगा खामियाजा

भिवानी : बंसीलाल यूनिवर्सिटी में जननायक जनता पार्टी के छात्र संगठन इंडियन नेशनल स्टूडेंट ऑर्गेनाइजेशन यानी इनसो का 31वां स्थापना दिवस मनाने पहुंचे जननायक जनता पार्टी के युवा प्रदेश अध्यक्ष दिग्विजय चौटाला को पुलिस ने हिरासत में लिया है। जानकारी के अनुसार दिग्विजय चौटाला के नेतृत्व में कार्यकर्ता ओल्ड कैंपस के गेट पर पहुंचे तो यूनिवर्सिटी और पुलिस प्रशासन ने उन्हें रोक दिया। प्रशासन की तरफ से कहा गया कि कार्यक्रम को लेकर मंजूरी नहीं ली गई। इसके बाद भी दिग्विजय चौटाला और कार्यकर्ता अंदर जाने की जिद पर अड़ गए। जिसके बाद काफी देर तक गेट पर दोनों पक्षों में कहासुनी हुई। फिर पुलिस ने दिग्विजय चौटाला व अन्य को हिरासत में ले लिया। पुलिस उन्हें बस में डालकर अपने साथ ले गई। कुछ देर बाद सभी को छोड़ दिया गया। हिरासत में लिए जाने से पहले दिग्विजय चौटाला ने कहा– प्रजातांत्रिक प्रणाली में सरकार हक छीनने का प्रयास कर रही है। हम इसकी ईंट से ईंट बजाने का काम करेंगे। सरकार ने छात्र हितों और सामाजिक सरोकारों से जुड़े दिवस को मनाने के साथ जो कुठाराघात किया, उसका खामियाजा सैनी सरकार को भुगतना पड़ेगा।

उन्होंने कहा कि आज पौधारोपण का कार्यक्रम व शहीदों के सम्मान में बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर व चौधरी देवीलाल की विचारधारा स्टूडेंट के प्रति थी। उसको लेकर एक कार्यक्रम रखा था, जिसकी अनुमति स्वयं वीसी ने मुझे दी थी, लेकिन जब बच्चे अनुमति लेने गए तो उन्हें नकार दिया। ये यूनिवर्सिटी को पूर्ण रूप से आरएसएस का अड्घ्डा बनाकर रखना चाहते हैं।

दर्दनाक हादसा : शिमला के रोहडू में पब्बर नदी में गिरी कार, 3 युवकों की मौत, एक घायल

शिमला : शिमला जिले के रोहडू उपमंडल में बीती रात एक दर्दनाक सड़क हादसे में तीन युवकों की मौत हो गई, जबकि एक युवक घायल हो गया। यह हादसा उस समय हुआ जब चारों युवक एक कार में सवार होकर लोकल लैला मेले से लौट रहे थे। कार अनियंत्रित होकर पब्बर नदी में जा गिरी। हादसे में विशाल ठाकुर (गांव मुंचहरा), अभय खंडियान (ग्राम डाकगांव), और हिमांशु (ग्राम मुंचहरा) की मौके पर ही मौत हो गई।

जबकि हर्ष चौहान (ग्राम डोगरी मुंचहारा) कार से छिटककर बाहर गिर गया और उसे हल्की चोटें आई हैं। पुलिस के अनुसार हादसा रात लगभग 12 बजे के आसपास हुआ, लेकिन पुलिस को इसकी जानकारी रात 3 बजे के करीब मिली। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और रेस्क्यू अभियान चलाया गया। तीनों मृतकों के शव नदी से निकालकर रोहडू अस्पताल भेजे गए हैं, जहां पोस्टमॉर्टम के बाद उन्हें परिजनों को सौंपा जाएगा। एसएचओ रोहडू प्रवीण राणा ने बताया कि हादसे के कारणों का अभी तक पता नहीं चल सका है। प्रारंभिक जांच में लापरवाही से ड्राइविंग या सड़क पर अंधेरा कारण हो सकता है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। हादसे के शिकार चारों युवक चिड़गांव क्षेत्र के रहने वाले बताए जा रहे हैं।

एक पौराणिक पात्र ज्ञान और शिक्षा के देवता हयग्रीव

भारत की समृद्ध, गौरवमयी पौराणिक परंपरा में समाहित अनेक अद्भुत व प्रेरणादायक कथाएं, प्रसंग और उनसे सम्बन्धित पौराणिक पात्र अक्सर ही विवाद के केन्द्रविन्दु बनते रहे हैं। ऐसे ही एक पौराणिक पात्र हैं– हयग्रीव, जो हयग्रीव नाम होने से अक्सर ही विद्वानों के मध्य कौतुहल के विषय बने रहे हैं।इसका कारण यह है कि पौराणिक ग्रंथों में हयग्रीव नाम दो रूपों –विष्णु और एक दानव रूप में आया है। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार भगवान विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक भगवान हयग्रीव हैं, जो अश्व के सिर व मानव के शरीर रूप में अवतरित हुए थे।इसके साथ ही हयग्रीव नामक एक दानव अर्थात दैत्य के होने की कथाएं भी इन ग्रंथों में अंकित हैं, जिसका सिर भी घोड़े का और शरीर मनुष्य का था। और जिसे विष्णु के अवतार हयग्रीव ने वध किया था।इस सम्बन्ध में विभिन्न पुराणों में पृथक–पृथक कथाएं अंकित हैं, जो इस विषय को और भी जटिल व कौतुहलक्रमशः बनाती व जगाती हैं। इसी कारण पौराणिक पात्र हयग्रीव के सम्बन्ध में अनेक भ्रान्ति, शंका व विसंगतिपूर्ण कथाएं लोगों में भ्रम का कारण बनी हुई हैं।

पौराणिक पात्र हयग्रीव का नाम हय अर्थात अश्व,घोड़ा और ग्रीव अर्थात गर्दन से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है– अश्व की ग्रीवा वाला अर्थात घोड़े की गर्दन वाला। हयग्रीव के बारे में महाभारत, रामायण, विष्णु पुराण, देवी भागवत पुराण आदि विभिन्न पौराणिक ग्रंथों में उल्लेख मिलता है।एक प्रचलित कथा के अनुसार हयग्रीव नामक एक असुर (दैत्य) असुरों का राजा था।वह अत्यंत शक्तिशाली और विद्वान था।दैत्य हयग्रीव ने कठिन तपस्या के बल पर भगवान ब्रह्मा से अमरता और अपराजेयता का वरदान प्राप्त किया था। अपनी अधर्मी प्रवृति और ब्रह्मा से प्राप्त वरदान के मद में उसने चारों वेदों की चोरी जैसे अनेक अनैतिक कर्म करने शुरू कर दिए।संसार में अज्ञानता व अराजकता फैलाने,वेदों के बिनाज्ञान व धर्म का पालन करना असंभव बनाने और अज्ञानता, अधर्म व अनैतिकता का वर्चस्व बढाने के उद्देश्य से असुर राज हयग्रीव ने संपूर्ण ब्रह्मांड के ज्ञान और धर्म का स्रोत माने जाने वाले ब्रह्मा द्वारा सृजित वेदों को चुराकर समुद्र के तल में छिपा दिया, जिससे संसार में अंधकार और अज्ञानता फैलने लगी। देवताओं और मनुष्यों के लिए वेदों के बिना धर्म का पालन करना कठिन हो गया, और संसार में पाप और अधर्म का बोलबालाबढ़ने लगा। इस संकट की स्थिति से चिंतितदेवताओं ने भगवान विष्णु से सहायता की प्रार्थना की।सृष्टि के पालनकर्ता और धर्म की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहने वाले विष्णुने इस संकट का समाधान करने का निर्णय लिया। उन्होंने हयग्रीव अवतार धारण किया, जिसमें उनका सिर घोड़े का और शरीर मानव का था। इस अनोखे रूप ने उन्हें हयग्रीव के समान बलशाली और शक्तिशाली बना दिया। और उन्होंने समुद्र तल तक की यात्रा कर असुर हयग्रीव का वध कर दिया और वेदों को ब्रह्मा को वापस कर दिया। कतिपय फेरबदल के साथ इसी से मिलती–जुलतीकई कथाएं, प्रसंग व वर्णन हयग्रीव के सम्बन्ध में विभिन्न पुराणों में अंकित है। भागवत पुराण में अंकित हयग्रीव से सम्बन्धित एक कथा के अनुसार हयग्रीव की कथा का प्रथम वर्णन मत्स्यावतार से संबंधित है।

कथानुसार हयग्रीव नामक एक असुर के द्वारा निद्रामग्न ब्रह्मा से वेदों को चुरा कर सागर की गहराईयों में जाकर छुप जाने के कारण वेदों के लोप हो जाने से समस्त संसार में अज्ञानता व्याप्त हो गई।तब ब्रह्मा ने भगवान विष्णु से वेदों के कल्याण का अनुरोध किया। उस समय तक सतयुग और त्रेतायुग के मध्य अर्थात संधिकाल में हुई प्रलय काल भी समीप आ चुका था। यह देखकर भगवान विष्णु ने अपना प्रथम मत्स्य अवतार लिया और स्वयंभू मनु एवं सप्तर्षियों की रक्षा करने के साथ ही जल में छिपे हयग्रीव का भी वध कर दिया और वेदों को पुनः प्राप्त कर परमपिता ब्रह्मा को लौटा दिया। हयग्रीव से सम्बन्धित एक कथा देवी सप्तशती में वर्णित भगवती श्रीदुर्गा से लड़ने वाले दो असुरों –मधु व कैटभ के समय की है। इस कथा के अनुसार विष्णु के कान के मैल से मधु और कैटभ नामक दो असुरों की उत्पति हुई।संपूर्ण ब्रह्मांड के ज्ञान का स्रोत माने जाने वाले वेदों के सृजनकर्ता ब्रह्मा जप, तप व ध्यान में लीन रहा करते थे।एक दिन ब्रह्मा के वेदों को प्रकट करते समय उस स्मृति को उन दोनों असुरों ने सुन लिया और उसे लेकर पाताल में छिप गए। तब भगवान विष्णु ने घोड़े के सिर और मनुष्य के धड़ वाला एक अद्भुत अवतार लिया, जो हयग्रीव के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उस हयग्रीव रुपी विष्णु ने मधु और कैटभ से युद्ध किया और उन दोनों का वध कर दिया। उन दोनों का वध करने के लिए भगवान शिव ने उन्हें सुदर्शन चक्र प्रदान किया और नारायण ने उसी सुदर्शन चक्र से दोनों असुरों के छः–छः टुकड़े कर दिए। दो सर, दो धड़, चार हाथ और चार पैर। उनके वही टुकड़े पृथ्वी पर गिरे, जिससे पृथ्वी की बारह परतों का निर्माण हुआ। उनके टुकड़े अर्थात मेद गिरने से पृथ्वी मेदिनी के नाम से प्रसिद्ध हुई। बाद में हयग्रीव रुपी विष्णु ने वेदों को ब्रह्मा को लौटा दिया। हयग्रीव के सन्दर्भ में एक कथा महाभारत में भी अंकित है। महाभारत में अंकित इस अत्यंत प्रचलित व प्रसिद्ध कथा के अनुसार महर्षि कश्यप और उनकी पत्नी दक्ष पुत्रीदनु से दानवों की उत्पत्ति हुई। उनमें से एक अश्व के सिर वाला दानव था, जिसका नाम था हयग्रीव। उसने अपनी तपस्या से माता पार्वती को प्रसन्न कर अमरता प्राप्त करने का वरदान मांगा, लेकिन पार्वती ने वह वरदान देने से स्पष्ट मना कर दिया। इस पर उसने वरदान मांगा कि उसकी मृत्यु हयग्रीव के ही हाथों हो। माता ने तथास्तु कह यह वरदान दे दिया। वरदान पाकर हयग्रीव ने सोचा कि मैं तो अब अमर हो गया हूँ। क्योंकि मेरी मृत्यु केवल मेरे ही हाथों से हो सकती है।संसार में अन्य कोई हयग्रीव तो है ही नहीं।अपनी अमरता की बात सोचकर उसने दंभवश सम्पूर्ण सृष्टि में त्राहि–त्राहि मचा दी। तब ब्रह्मा ने विष्णु से इसका कोई उपाय करने को कहा।भगवान विष्णु लीलावश एक दिन माता लक्ष्मी की सुंदरता को देख कर मुस्कुराने लगे। माता उनकी लीला समझ नहीं पाई और उन्होंने सोचा कि स्वामी उनका परिहास कर रहे हैं। तब उन्होंने विष्णु को श्राप दे दिया कि उनका मस्तक धड़ से अलग हो जाए।श्राप देने के बाद माता लक्ष्मी अपनी गलती पर विलाप करने लगीं। तब विष्णु ने उन्हें समझाया कि सृष्टि के कल्याण के लिए उनका यहश्राप वरदान बन जायेगा। हयग्रीव दानव ने अहंकार में आकर सीधे विष्णु को ललकारा। विष्णु की तो यह इच्छा ही थी।वे तत्काल उससे युद्ध करने पहुंचे। दोनों में घोर युद्ध आरंभ हुआ, किन्तु माता पार्वती के वरदान के कारण विष्णु उसका वध नहीं कर रहे थे। इस प्रकार युद्ध करते करते सात दिन बीत गए।आठवें दिन दोनों युद्ध विराम लेकर विश्राम करने लगे। हयग्रीव भूमि पर और विष्णु अपने धनुष सारंग (सांगड़) की प्रत्यंचा पर विश्राम करने लगे। विष्णु के योगनिद्रा में चले जाने पर देवताओं को यह चिंता जगी कि ऐसे मेंअसुर हयग्रीव का वध कौन करेगा? ऐसा सोचकर देवताओं ने निर्णय लिया कि विष्णु के धनुष सारंग की प्रत्यंचा खींची जाए जिसके स्वर से विष्णु की निद्रा भंग हो जाएगी। लेकिन किसी में भी विष्णु के धनुष सारंग के प्रत्यंचा को खींचने की सार्मथ्य नहीं थी।उह देख देवताओं ने ब्रह्मा से प्रार्थना की।देवताओं की प्रार्थना सुनकर ब्रह्मा ने अपने तेज से एक कीड़े को जन्म दिया और उसे सारंग की प्रत्यंचा काटने को कहा। विधाता के तेज से उत्पन्न उस कीड़े ने सारंग की प्रत्यंचा काट दी, जिससे एक कर्णभेदी स्वर उत्पन्न हुआ और उसी प्रत्यंचा से विष्णु की गर्दन कट गई। इस प्रकार माता लक्ष्मी का श्राप फलीभूत हुआ। यह देखकर देवता शोक में डूब गए कि अब हयग्रीव का वध कौन करेगा?तब वहां माता पार्वती प्रकट हुई और सबको दानव हयग्रीव को दिए गए अपने वरदान के सम्बन्ध में बताया। उन्होंने ब्रह्मा से प्रार्थना की कि नारायण के धड़ में अश्व का मुख लगा कर उन्हें हयग्रीव रूप दिया जाए, जिससे वे असुर हयग्रीव का वध कर सकें। तब ब्रह्मा ने अश्व के मुख वाले देवों के वैद्य अश्विनीकुमारों को बुलाया जो स्वयं अश्व समान मुख होने से हयग्रीव के रूप में प्रसिद्ध थे।अश्विनीकुमार द्वय ने ब्रह्मा के आदेश पर एक नील अश्व का मुख विष्णु के धड़ पर लगा दिया। इस प्रकारविष्णु ने हयग्रीव अवतार लिया। और माता पार्वती के वरदान के अनुसार उसका अनुपालन करते हुए तत्काल ही हयग्रीव दानव का वध कर दिया और सृष्टि को उसके अत्याचार से मुक्त करवाया। एक अन्य कथा के अनुसार कश्यप और दनु का पुत्र दानव हयग्रीव दानवों का पहला शासक बना। जब ईश्वर ने वेदों की रचना की और उन्हें ब्रह्मा को दिया, तब शिव ने यह निर्णय लिया कि वे मनु और उनकी पत्नी शतरूपा को छोड़कर शेष समस्त मानवता का संहार कर देंगे, क्योंकि शेष मानवता वेदों को प्राप्त करने के लिए अत्यधिक भ्रष्ट थी और वेदज्ञान से दूर होने लगी थी।जब हयग्रीव को यह ज्ञात हुआ कि मनुष्य वेदज्ञान के अनुपालन से दानवों से श्रेष्ठ हो जाएंगे,तो उसने मानवों को वेद ज्ञान प्राप्त करने से रोकने का निश्चय किया। एक दिन वह ब्रह्मा की अनुपस्थिति में सतयलोक पहुंचाऔर वहां उसने घोड़े का रूप धारण कर लिया, ताकि वेदों, जो उस समय चार बालकों के रूप में थे, का ध्यान अपनी ओरआकर्षित कर सके। उसने बालक रुपी वेदों से पूछा कि ब्रह्मा ने मानवों तक पहुंचाने के स्थान पर उन्हें अपने लोक में क्यों ले आए?जब वेदों ने अपनी कथा सुनाई, तो हयग्रीव हंस पड़ा और उन्हें ब्रह्मा की मंशा के बारे में धोखे में डालते हुए कहा कि ब्रह्मा उन्हें स्वयं के लिए रखना चाहते हैं। इसके बादराक्षस हयग्रीव ने वेदों को कैद कर लिया।

यह स्थिति देखविष्णु ने मत्स्य अवतार धारण कर मनु को यह निर्देश दिया कि वह उस महाप्रलय से कैसे बचें, जिसे शीघ्र ही समस्त अधर्म का नाश करने के लिए शिव भेजने वाले थे? इसके पश्चातविष्णु ने मत्स्य रूप में हयग्रीव का वध किया और वेदों को मुक्त कर दिया, ताकि प्रलय के पश्चात वे उन्हें मनु को प्रदान कर सकें। विष्णु अवतार भगवान हयग्रीव की उत्पति अर्थात अवतरण श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि को होने की मान्यता होने के कारण इस दिन इनकी पूजा– अर्चना करने की पौराणिक परिपाटी है।हयग्रीव की पूजा ज्ञान और शिक्षा के देवता के रूप में भी विद्वानों और विद्यार्थियों के द्वारा विशेष रूप से की जाती है।

– अशोक "प्रवृद्ध"

Printed, Published,Edited, & Owned by Prakash Kumar Dhal, Printed at Promodini Publication, Main road , Chhend colony , Rourkela-15 & Published at ECR-73, Chhend Colony, Rourkela-15, Editor : Prakash kumar Dhal, Email:kalingasamachar@gmail.com , Mob: 9439951525, Ph. 0661-2646999

ओडिशा समाचार

कलिंग समाचार | राउरकेला, शुक्रवार 18 सितंबर 2026 | पृष्ठ-6

नंदनकानन में शेरनी माया के दोनों नवजात शावकों की मौत

भुवनेश्वर १७/०९ (संवाददाता): ओडिशा के नंदनकानन जूलॉजिकल पार्क से वन्यजीव प्रेमियों के लिए दुखद खबर सामने आई है। पहली बार मां बनी शेरनी माया द्वारा जन्म दिए गए दोनों नवजात शावकों की मौत हो गई है। इनमें से एक शावक जन्म के समय ही मृत पाया गया था जबकि दूसरा नर शावक तीन दिन तक जिंदगी के लिए संघर्ष करने के बाद दम तोड़ गया। दूसरे शावक के पोस्टमार्टम में जन्मजात विकृति सामने आने की जानकारी दी गई है।यात्रा की गाइड और यात्रा की जानकारी नंदनकानन जूलॉजिकल पार्क प्रशासन के अनुसार शेरनी माया ने सात सितंबर को दो शावकों को जन्म दिया था। यह माया का पहला प्रसव था। शावकों के जन्म को नंदनकानन में शेरों के संरक्षण और प्रजनन कार्यक्रम के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा था लेकिन पहले शावक के मृत पैदा होने से खुशी अधूरी रह गई। दूसरा शावक जीवित था लेकिन जन्म के समय से ही उसकी स्थिति सामान्य नहीं थी।

जू प्रशासन ने जीवित बचे नर शावक और उसकी मां की गतिविधियों पर विशेष निगरानी शुरू की थी। बाड़े में लगे CCTV कैमरों के माध्यम से कर्मचारियों और पशु चिकित्सकों की टीम लगातार दोनों को देख रही थी। निगरानी के दौरान पता चला कि शावक अपनी मां का दूध ठीक तरीके से नहीं पी पा रहा है। इससे उसके शरीर को आवश्यक पोषण और ऊर्जा नहीं मिल पा रही थी। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार पहली बार मां बनी माया ने जीवित शावक को पूरी तरह स्वीकार नहीं किया था। इसके बाद जू प्रशासन ने शावक को उसकी मां से अलग कर उपचार केंद्र के शिशु पशु पृथक्करण कक्ष में रखने का निर्णय लिया। पशु चिकित्सकों ने उसे हाथ से दूध और आवश्यक पोषण देने का प्रयास किया लेकिन उसकी शारीरिक स्थिति में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ।

बताया गया कि शावक को दूध पिलाने के दौरान तरल उसके मुंह से पेट तक पहुंचने के बजाय नाक से बाहर आने लगता था। इससे चिकित्सकों को उसके मुंह के अंदर जन्मजात समस्या होने का संदेह हुआ। पर्याप्त मात्रा में दूध नहीं ले पाने के कारण शावक लगातार कमजोर होता गया। चिकित्सकों की निगरानी और उपचार के बावजूद उसे बचाया नहीं जा सका और जन्म के तीन दिन बाद 10 सितंबर को उसकी मौत हो गई। शावक की मौत के बाद पशु चिकित्सकों की टीम ने पोस्टमार्टम किया। रिपोर्ट में जन्मजात 'ज़्लेज़्ट पैलेट' यानी तालू में दरार को मौत का प्रमुख कारण बताया गया। इस विकृति के कारण मुंह और नाक के बीच सामान्य संरचना विकसित नहीं हो पाती। इससे नवजात के लिए दूध पीना बेहद कठिन हो जाता है और दूध नाक या श्वसन मार्ग की तरफ जा सकता है। पर्याप्त पोषण नहीं मिलने तथा दूसरी स्वास्थ्य जटिलताएं पैदा होने से शावक की हालत गंभीर हो गई थी। नवजात वन्यजीवों के लिए जन्म के शुरुआती दिन बेहद महत्वपूर्ण होते हैं। मां का पहला दूध उन्हें पोषण देने के साथ बीमारियों से बचाने वाली रोग प्रतिरोधक क्षमता भी प्रदान करता है। किसी जन्मजात समस्या या मां द्वारा शावक को स्वीकार नहीं किए जाने की स्थिति में उसका जीवित रहना मुश्किल हो सकता है। ऐसे मामलों में पशु चिकित्सक कृत्रिम तरीके से दूध और पोषण देकर शावक को बचाने का प्रयास करते हैं लेकिन जन्मजात विकृतियों के कारण उपचार जटिल हो जाता है। नंदनकानन प्रशासन के लिए यह घटना बड़ा झटका मानी जा रही है। माया की पहली गर्भावस्था और प्रसव को लेकर जू प्रबंधन ने विशेष तैयारियां की थीं। गर्भावस्था के दौरान भी उसकी नियमित निगरानी और स्वास्थ्य जांच की गई थी। दोनों शावकों के जन्म के बाद प्रशासन को उम्मीद थी कि जीवित शावक को विशेष देखभाल के माध्यम से बचा लिया जाएगा लेकिन जन्मजात समस्या के कारण सभी प्रयास असफल हो गए। शावक की मौत से पहले नंदनकानन में शेरों की संख्या बढ़कर 24 होने की खबर सामने आई थी। जीवित शावक की मौत के बाद पार्क में शेरों की संख्या फिर 23 रह गई है। जू प्रशासन अब माया के स्वास्थ्य और व्यवहार पर नजर रख रहा है। पहली बार मां बनने और कुछ ही दिनों में दोनों शावकों को खोने के बाद उसके व्यवहार में आने वाले संभावित बदलावों को देखते हुए विशेष निगरानी आवश्यक मानी जा रही है। वन्यजीव प्रजनन कार्यक्रमों में नवजात शावकों की मौत संरक्षण विशेषज्ञों के लिए गंभीर चिंता का विषय होती है। ऐसी घटनाओं के बाद माता-पिता के स्वास्थ्य आनुवंशिक इतिहास गर्भावस्था के दौरान पोषण और प्रसव से संबंधित परिस्थितियों का अध्ययन किया जाता है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट से मिलने वाली जानकारी भविष्य के प्रजनन कार्यक्रमों और नवजातों की चिकित्सा व्यवस्था को बेहतर बनाने में मदद कर सकती है। इस मामले में जन्मजात ज़्लेज़्ट पैलेट की जानकारी सामने आने के बाद विशेषज्ञ यह भी देख सकते हैं कि समस्या आनुवंशिक कारणों से हुई या गर्भ में विकास के दौरान किसी अन्य वजह से पैदा हुई। हालांकि किसी निश्चित कारण पर पहुंचने के लिए विस्तृत चिकित्सकीय और आनुवंशिक जांच की जरूरत होगी। अभी प्रशासन की ओर से केवल पोस्टमार्टम में सामने आई जन्मजात विकृति को शावक की मौत का प्रमुख कारण बताया गया है। माया और नर शेर शिवम से सात सितंबर को इन दोनों शावकों का जन्म हुआ था। पहला शावक मृत पैदा हुआ और दूसरे को मां से दूध नहीं मिलने के बाद हाथ से पालने का प्रयास किया गया। दोनों की मौत ने नंदनकानन के शेर प्रजनन कार्यक्रम को झटका दिया है। फिलहाल जू प्रशासन माया की देखभाल करने के साथ पूरे घटनाक्रम की चिकित्सकीय समीक्षा कर रहा है।

एसएसआरवीएम इस्पात इंग्लिश मीडियम स्कूल में किशोर स्वास्थ्य जागरूकता शिविर आयोजित

राउरकेला १७/०९ (संवाददाता): राउरकेला इस्पात संयंत्र के इस्पात जनरल अस्पताल (आई.जी.एच.) एवं सी.एस.आर. विभाग द्वारा संयुक्त रूप से सेज़्टर-20 स्थित एस.एस.आर.वी.एम. इस्पात इंग्लिश मीडियम स्कूल में किशोर स्वास्थ्य जागरूकता शिविर आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुज़्यक महा प्रबंधक (टी.एस. एवं सी.एस.आर.), श्री टी.जी. कानेकर, महा प्रबंधक (टी.एस. एवं सी.एस.आर.), श्री पी. के.साहू, निदेशक, एस.एस. आर.वी.एम., श्री जी.एस.दास तथा प्राचार्या (एस.एस.आर. वी.एम. आई.ई.एम.एस.), डॉ. खुशबू ज्योति उपस्थित थे। शिविर का उद्देश्य स्कूली विद्यार्थियों को किशोरावस्था से संबंधित विभिन्न स्वास्थ्य पहलुओं के बारे में जागरूक करना तथा उन्हें स्वस्थ आदतें अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना था, ताकि वे स्वस्थ भविष्य की ओर अग्रसर हो सकें। कार्यक्रम के दौरान कुल 200 विद्यार्थियों की स्वास्थ्य जांच की गई। इस्पात जनरल अस्पताल के विशेषज्ञ चिकित्सकों की एक टीम ने शिविर में भाग लिया और विद्यार्थियों से चर्चा किया। चिकित्सा टीम में बाल रोग विशेषज्ञ, डॉ. सुमित भकत तथा स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ, डॉ. संजू यादव शामिल थे। चिकित्सकों ने विद्यार्थियों के साथ संवाद करते हुए किशोर स्वास्थ्य के विभिन्न पहलुओं के प्रति उन्हें जागरूक किया। इस दौरान एच.पी.वी. से संबंधित बीमारियों, जिसमें सर्वाइकल कैंसर भी शामिल है, की रोकथाम में एच.पी.वी. टीकाकरण के महत्व पर विशेष जोर दिया गया। कार्यक्रम में किशोरों के समग्र स्वास्थ्य एवं कल्याण से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों को शामिल किया गया, जिनमें पोषण एवं शारीरिक फिटनेस, मानसिक स्वास्थ्य, वृद्धि एवं विकास, यौवनावस्था एवं यौन स्वास्थ्य, नशीले पदार्थों के दुरुपयोग के प्रति जागरूकता तथा निवारक स्वास्थ्य देखभाल प्रमुख थे। विद्यार्थियों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने तथा आवश्यकता पड़ने पर समय पर चिकित्सकीय सलाह लेने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया।

हवाला ठगी रैकेट का नेटवर्क ओडिशा से दुबई तक

भुवनेश्वर १७/०९ (संवाददाता): राज्य में हवाला धोखाधड़ी का एक रैकेट अपने पैर पसार रहा है। धोखेबाज़ अलग-अलग ज़िलों में लोगों को भारतीय मुद्रा के बदले अमेरिकी डॉलर देने का वादा करके निशाना बना रहे हैं। पिछले हज़्ते कम से कम 10 लोग इस रैकेट का शिकार हुए हैं और कुल मिलाकर 1.5 करोड़ रुपये से ज़्यादा गंवा चुके हैं। पीड़ितों ने पुलिस थानों से संपर्क किया, लेकिन खबरों के मुताबिक पुलिस ने केस दर्ज करने से इनकार कर दिया। पुलिस ने हवाला लेन-देन के गैर-कानूनी होने और, मुद्रा ऑनलाइन लेन-देन का कोई रिकॉर्ड न होने का हवाला दिया। पीड़ितों के अनुसार, धोखेबाज़ों ने अमेरिकी डॉलर देने का वादा करके हवाला चैनलों के ज़रिए नकद पैसे लिए। पैसे मिलने के बाद, आरोपी डॉलर दिए बिना ही गायब हो गए। खबरों के मुताबिक, इस रैकेट का नेटवर्क ओडिशा से लेकर कोलकाता और दुबई तक फैला हुआ है। पीड़ितों ने बताया कि उन्हें यह भरोसा दिलाकर लालच दिया गया कि हवाला चैनल के ज़रिए भारतीय मुद्रा को अमेरिकी डॉलर में बदला जा सकता है। पुलिस ने शिकायत करने वालों से कहा है कि चूंकि हवाला लेन-देन गैर-कानूनी है और पूरी तरह से नकद में होता है, इसलिए लेन-देन को साबित करने या आरोपियों की पहचान करने के लिए बहुत कम दस्तावेज़ी या डिजिटल सबूत मौजूद हैं। नतीजतन, शिकायत करने वाले बिना केस दर्ज कराए ही घर लौट गए। ठगी का शिकार होने वालों में राजधानी शहर के नयापल्ली इलाके के निवासी अटल बाजपेयी, सिद्धार्थ नायक और बिनोद घटुआ के साथ-साथ अन्य लोग भी शामिल हैं। उन्होंने लक्ष्मीसागर और नयापल्ली पुलिस थानों में शिकायतें कीं, लेकिन पुलिस ने केस दर्ज करने से इनकार कर दिया। रिपोर्ट्स के मुताबिक, अटल, सिद्धार्थ और अन्य लोग ऑनलाइन व्यापार करते हैं और उन्हें अपने लेन-देन के लिए अमेरिकी डॉलर की ज़रूरत होती है। वे ऑनलाइन कोलकाता के एक ब्रोकर के संपर्क में आए, जिसने दावा किया कि वह अंतरराष्ट्रीय हवाला लेन-देन में शामिल है और भुवनेश्वर तथा ओडिशा के अन्य हिस्सों में उसका ऑफिस है। उसने उन्हें बताया कि भुवनेश्वर में उसका एजेंट उनसे संपर्क करेगा। इसके कुछ ही समय बाद, एक युवक ने उन्हें फ़ोन किया, खुद को ब्रोकर का एजेंट बताया और उनसे मिलने के लिए कहा। लक्ष्मीसागर इलाके में उनसे मिलने के बाद, अटल और अन्य लोगों ने 25 लाख रुपये से ज़्यादा नकद दिए। हालांकि, पैसे मिलने के बाद आरोपी ने वादा किए गए अमेरिकी डॉलर नहीं दिए। बार-बार फ़ोन करने पर भी कोई जवाब नहीं मिला ज़्योंकि आरोपी का फ़ोन स्विच ऑफ़ था। आरोपी द्वारा दिया गया विज़िटिंग कार्ड भी नकली निकला। धोखाधड़ी का पता चलने पर पीड़ित पुलिस स्टेशन गए, लेकिन आरोप लगाया कि पुलिस ने उनकी शिकायत दर्ज नहीं की। उन्होंने कहा कि वे कानूनी रास्ता अपनाएंगे। इससे पहले एक ऐसे ही मामले में, एक बार के मालिक के साथ हवाला ट्रांज़ैक्शन में कथित तौर पर 1.5 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी हुई थी।हालांकि खबर है कि कई लोग इस तरह की धोखाधड़ी का शिकार हुए हैं, लेकिन बहुत से लोग पुलिस के पास नहीं जाते ज़्योंकि हवाला ट्रांज़ैक्शन गैर-कानूनी हैं। एक सीनियर पुलिस अधिकारी ने कहा कि भारत में हवाला ट्रांज़ैक्शन गैर-कानूनी हैं और ऐसे नेटवर्क चलाने वालों और उनके ज़रिए पैसे का लेन-देन करने वालों, दोनों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई हो सकती है। अधिकारी ने कहा कि इसी बात का फायदा उठाकर कुछ ब्रोकर लोगों के साथ धोखाधड़ी कर रहे हैं।

ओडिशा में 25 सालों में 1,671 हाथियों की मौत हुई

भुवनेश्वर १७/०९ (संवाददाता): ओडिशा में इंसान और हाथी के बीच टकराव पर 25 साल के एक सर्वे से पता चला है कि हाथियों की मौतें ज़्यादातर उन जगहों पर होती हैं जहाँ जंगल, खदानों, गाँवों और ट्रांसपोर्ट नेटवर्क से मिलते हैं। वाइल्डलाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया और प्रोजेज़्ट एलिफेंट की तैयार की गई रिपोर्ट %ओडिशा राज्य में इंसान-हाथी टकराव (2000-2005)= रुझान, चुनौतियाँ और जानकारी में राज्य के वन विभाग के 45 वन डिवीज़नों के पिछले 25 सालों के सरकारी रिकॉर्ड का गहराई से अध्ययन किया गया।

नतीजे उज़्मीद के मुताबिक ही थे, लेकिन रिपोर्ट में कोई सनसनीखेज निष्कर्ष निकालने के बजाय उन कई वजहों और कारकों का पता लगाया गया, जिनकी वजह से ओडिशा पूरे देश में हाथियों और इंसानों के बीच टकराव वाले सबसे गंभीर इलाकों में से एक बन गया है। रिपोर्ट में 2000 से 2025 के बीच राज्य में हाथियों की 1,671 मौतों का चौंकाने वाला आंकड़ा दर्ज किया गया, जिसमें बिजली का करंट लगना मौत की सबसे बड़ी इंसानी वजह (यानी इंसानी गतिविधियों से होने वाली मौत) बनकर उभरा। 25 साल की अवधि में दर्ज कुल मौतों में से कम से कम 508, यानी लगभग 30 प्रतिशत मौतें इंसानी वजहों से हुईं। बाकी मौतें प्राकृतिक कारणों से हुईं, जिनमें बीमारी, शारीरिक स्थिति, प्राकृतिक दुर्घटनाएँ और इलाके को लेकर होने वाली लड़ाइयाँ शामिल थीं।

द इंस्टीट्यूशन ऑफ़ इंजीनियर्स (इंडिया) राउरकेला सेंटर और राउरकेला स्टील प्लांट द्वारा मनाया गया 59वां इंजीनियर्स दिवस

राउरकेला १७/०९ (संवाददाता): द इंस्टीट्यूशन ऑफ़ इंजीनियर्स (इंडिया)% राउरकेला लोकल सेंटर, ने राउरकेला स्टील प्लांट (आरएसपी) के सहयोग से, 15 सितंबर 2026 को आरएसपी के गोपबंधु सभागार में 59वां इंजीनियर्स डे बहुत उत्साह और पेशेवर उत्साह के साथ मनाया गया। राष्ट्रीय विषय, तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर भारत के लिए इंजीनियरिंग में उत्कृष्टता पर केंद्रित, इस कार्यक्रम ने देश भर में तकनीकी आत्मनिर्भरता, हरित औद्योगीकरण और सतत विकास को चलाने में इंजीनियरिंग समुदाय की अपरिहार्य भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के मुज़्य अतिथि राउरकेला इस्पात संयंत्र के कार्यपालक निदेशक (वर्क्स), श्री विश्व रंजन पलाई, मुज़्य वक्ता आदित्य एल्युमीनियम, हिंडाल्को इंडस्ट्रीज लिमिटेड के अध्यक्ष और यूनिट प्रमुख श्री जगन्नाथ पी. नायक, सज़्मानित अतिथि राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी), राउरकेला के निदेशक प्रभारी प्रोफेसर प्रदीप सरकार, आईईआई राउरकेला के अध्यक्ष और आरएसपी में महाप्रबंधक (प्लेट मिल), श्री दीसंकर महापात्रा, और आईईआई राउरकेला के मानद सचिव श्री हिमांशु सतपथी मंच पर मौजूद थे। कार्यक्रम की शुरुआत भारत रत्न सर एम. विश्वेश्वरैया को श्रद्धांजलि देने के साथ हुई, जिनकी जयंती हर साल 15 सितंबर को इंजीनियर्स डे के रूप में मनाई जाती है। अपने संबोधन में, श्री बी.आर. पलाई ने इंजीनियरिंग समुदाय की लगातार परिचालन उत्कृष्टता की सराहना की और उन्हें भारत के एक स्वतंत्र तकनीकी शक्ति के रूप में उभरने में मदद करने के लिए लगातार सतत तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। मुज़्य भाषण देते हुए, श्री जे. पी. नायक ने स्थानीय नवाचार और उन्नत इंजीनियरिंग प्रथाओं के माध्यम से तकनीकी संप्रभुता प्राप्त करने पर विस्तार से बात की। प्रो. पी. सरकार ने अकादमिक अनुसंधान और औद्योगिक निष्पादन के बीच महत्वपूर्ण संबंध पर दर्शकों को संबोधित किया। असाधारण नेतृत्व और संस्थागत सेवा के लिए प्रतिष्ठित %एमिनेंट इंजीनियर अवार्ड्स% पूर्व महाप्रबंधक (आरएसपी), श्री ए.के. गोस्वामी और स्थानीय केंद्र के पूर्व मानद सचिव और एनआईटी राउरकेला में इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग से सेवानिवृज़ प्रोफेसर, प्रो. सरदिंदु घोष को प्रदान किए गए। इससे पहले, गणमान्य लोगों का स्वागत करते हुए श्री दीपांकर महापात्रा ने इस बात पर ज़ोर दिया कि आधुनिक इंजीनियरों का यह कर्तव्य है कि वे औद्योगिक विस्तार को पर्यावरण की स्थिरता के साथ तालमेल बिठाकर आगे बढ़ाएं। इस अवसर पर सर एम. विश्वेश्वरैया की जीवन की महत्वपूर्ण उपलज़्धियों और उनके स्थायी औद्योगिक योगदान को दर्शाने वाला एक प्रेरणादायक ऑडियो-विज़ुअल दिखाया गया, जिसके बाद आईई (ढ्ढ) राउरकेला स्थानीय केंद्र की स्मारिका का विमोचन किया गया। श्री हिमांशु सतपथी ने औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया।

ओडिशा में नाबालिग के साथ रेप के आरोप में 56 साल का व्यक्ति गिरफ़्तार

केंद्रपाड़ा १७/०९ (संवाददाता): पुलिस ने रविवार को एक व्यक्ति को गिरज़्तार किया। उस पर आरोप है कि उसने शनिवार शाम को तांतियापाल मरीन पुलिस इलाके के सुनीति गांव में 12 साल की लड़की के साथ रेप किया। पुलिस के मुताबिक, नाबालिग लड़की पास के बाज़ार से घर लौट रही थी, तभी 56 साल के आरोपी ने उसे खींचकर एक सुनसान जगह पर ले जाकर उसके साथ रेप किया। उसने लड़की को धमकी दी कि अगर उसने किसी को इस घटना के बारे में बताया तो उसे गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। घर लौटने पर नाबालिग ने अपने माता-पिता को घटना के बारे में बताया। इसके बाद रविवार को उसकी माँ ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई और आरोप लगाया कि आरोपी ने उसकी नाबालिग बेटी के साथ रेप किया है। तांतियापाल मरीन ढ्ढढ्ढष्ट नरेश कुमार साहू ने कहा, स्नढ्ढक्र के आधार पर हमने जांच शुरू की और आरोपी को गिरज़्तार कर लिया। पूछताछ के दौरान आरोपी ने अपना जुर्म कबूल कर लिया। उन्होंने बताया कि लड़की को तुरंत सरकारी अस्पताल ले जाया गया, जहाँ डॉज़्टरों ने उसकी मेडिकल जांच की।